• जयपुर, शुक्रवार, 24 मई 24 • वर्ष 13 • अंक 267 • पृष्ठ : 8 • मूल्य : 1 रुपये

www.chamaktarajasthan.in| Email : chamaktarajasthan8789@gmail.com

डाक पंजीयन संख्याः RJ/JPC/D19/2024-25

RNI. No. RAJHIND/2011/40950

दैनिक

राज्य तथा केंद्र द्वारा मान्यता प्राप्त

सच के साथ मजबूती से बढ़ाये क़दम

चमकता राजस्थान

जयपुर से प्रकाशित एवं प्रसारित

विज्ञापन के लिए : 93145 05000

अजमेर, सीकर, झुंझनुं, सवाईमाधोपुर, चित्तौड़गढ़, बूँदी, धौलपुर, हिंडौन, भरतपुर, झालावाड़, जोधपुर, बीकानेर से प्रसारित

सुविचार

''सत्य को हज़ार तरीकों से बताया जा सकता है, फिर भी हर एक सत्य ही होगा।''

● **स्वामी विवेकानंद**

पेज @3 अमर शहीद कु प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान शाहपुरा ने शहीद कुंवर...

पेज @5 बाड़मेर पुलिस की अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के विरुद्ध ...

पेज @8 तुष्टिकरण की राजनीति से कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने लोकतंत्र...

छत्तीसगढ़ : नारायणपुर में मुठभेड़ में सात नक्सली ढेर

नारायणपुर । एजेंसी

- **कई नक्सली गोली लगने से घायल**
- **अत्याधुनिक हथियार बरामद**

छत्तीसगढ़ के नारायणपुर जिले के अबूझमाड़ इलाके के रेकावाया के जंगल में गुरुवार को पहली बार जवान नक्सल विरोधी अभियान पर यहां तक पहुंचे। यहां नक्सली संगठन की बटालियन नंबर 5 के साथ हुई मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने अब तक सात नक्सलियों को ढेर कर दिया है।

सभी मारे गये वर्दीधारी नक्सलियों के शव बरामद कर लिए गये हैं। मुठभेड़ में शामिल जवानों का दावा है कि कई नक्सली गोली लगने से घायल भी हुए हैं। मारे गए नक्सलियों की संख्या और बढ़ सकती है। मौके से पांच ऑटोमेटिक हथियार भी बरामद किए गए हैं।

नारायणपुर के एसपी प्रभात कुमार ने मुठभेड़ की पुष्टि करते हुए बताया कि जवानों से जानकारी मिली है कि नक्सलियों ने यहां अपना अस्थाई कैंप बना रखा

पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़

एरिया कमांडर बुधराम मुंडा ढेर

चाईबासा । एजेंसी

खूंटी के अड़की और चाईबासा जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में गुरुवार को नक्सलियों और सुरक्षाबलों के बीच मुठभेड़ हो गई। मुठभेड़ में सुरक्षाबलों ने एक नक्सली को मार गिराया। मारे गये नक्सली की पहचान एरिया कमांडर बुधराम मुंडा के रूप में की गई है। मुठभेड़ स्थल पश्चिमी सिंहभूम के बलियाडीह गांव का जंगल है, जो चाईबासा क्षेत्र में पड़ता है।

पुलिस को गुप्त सूचना मिली थी कि भाकपा माओवादियों के टॉप नक्सली जुटने वाले हैं। सूचना महत्वपूर्ण थी इसलिए सीआरपीएफ की 209 कोबरा, सीआरपीएफ 60 बटालियन के जवान और झारखंड पुलिस ने

कई नक्सलियों के घायल होने की सूचना

संयुक्त अभियान चलाया। इसी दौरान खूंटी जिले के अड़की और पश्चिमी सिंहभूम जिले के सीमावर्ती क्षेत्र में जंगल में पुलिस और नक्सलियों के बीच गुरुवार की दोपहर मुठभेड़ शुरू हो गयी। दोनों तरफ से गोलीबारी के बीच एक नक्सली मारा गया, जबकि कई नक्सलियों के घायल होने की सूचना है। घटना की पुष्टि करते हुए डीआईजी अनूप बिरथरे ने बताया कि मुठभेड़ में एक नक्सली मारा गया है और सर्च अभियान जारी है। इस संबंध में पश्चिमी सिंहभूम जिला के एसपी आशुतोष शेखर ने बताया कि पुलिस और नक्सलियों के बीच मुठभेड़ हुई है।

पश्चिम बंगाल में भिड़े भाजपा-तृणमूल समर्थक, भाजपा कार्यकर्ता की मौत

नंदीग्राम/एजेंसी।

पश्चिम बंगाल में लोकसभा चुनाव के छठे चरण के मतदान से पहले नंदीग्राम में बुधवार की रात हिंसा भड़क उठी, जिससे राज्य की सियासत गरमा गई। घटना पूर्वी मेदिनीपुर जिले के नंदीग्राम विधानसभा के ब्लॉक नंबर एक के सोनचूरा गांव के मनसा बाजार की है।

बताया जा रहा है कि तृणमूल कांग्रेस के समर्थकों ने कई भाजपा कार्यकर्ताओं के घरों में घुसकर धारदार हथियारों से हमला किया। इस हमले में भाजपा की महिला कार्यकर्ता की मौत हो गई और आठ अन्य भाजपा कार्यकर्ता घायल हो गए। मृतक का नाम रथीबाला आड़ी बताया जा रहा है। घायलों में से एक को कोलकाता रेफर कर दिया गया है।

घटना के बाद से इलाके में तनाव का माहौल है। इस हमले से गुस्साए भाजपा कार्यकर्ता जमकर विरोध-प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने सड×कों पर जाम लगा दिया और तृणमूल के खिलाफ नारे लगाए।

बता दें कि 20 मई को लोकसभा चुनाव के पांचवें चरण की वोटिंग के दौरान भी पश्चिम बंगाल में

कई जगह झड़प और हिंसा के मामले सामने आए थे। बैरकपुर, बोनगांव, आरामबाग हावड़ा आदि क्षेत्रों से छिटपुट घटनाएं होने की खबरें थी, जिसमें वोटरों को धमकाना, वोटिंग रुकवाना, विरोधी पार्टियों के कार्यकर्ताओं को पीटना आदि शामिल था। राज्य में 25 मई को तामलुक, कांथी, घाटल, झाड़ग्राम, मेदिनीपुर, पुरुलिया, बंकुरा और बिशनुपुर सहित आठ सीटों पर छठे चरण का मतदान होना है। सभी सीटों पर मतदान सुबह सात से शाम छह बजे तक होगा। यहां प्रत्याशियों की कुल संख्या 79 है। मतदान से पहले हिंसा की इस घटना से सियासी पारा गरमा गया है।

न्यूज अपडेट

एल्विश यादव का रेव पार्टी में सांप के जहर के इस्तेमाल से इनकार, चार्जशीट में खुलासा

नोएडा/एजेंसी। यूट्यूबर एल्विश यादव और उसके साथियों के खिलाफ पुलिस अदालत में 1,200 पन्नों का आरोपपत्र दाखिल कर चुकी है। इसमें उससे पूछे गए बयान के साथ-साथ अन्य सभी साक्षयों को भी दर्ज किया गया है, जिन्हें पुलिस ने जुटाए थे। आरोपी से पूछे गए सवालों के जवाब में काफी विरोधाभास देखने को मिला है।

दरअसल, पिछले महीने पुलिस ने इस मामले में एल्विश और उसके आठ अन्य साथियों के खिलाफ 1,200 पन्नों की चार्जशीट दायर की थी। अब इस चार्जशीट के कुछ विवरण सामने आये हैं। पुलिस ने एल्विश यादव से सांप और जहर पार्टी को लेकर कई सवाल किए। हर बार उसने जानकारी नहीं है जवाब दिया। उसने सभी आरोप को गलत बताया।

जब उससे पूछा गया कि पार्टी में कौन-कौन आया था, उसने जानकारी नहीं है कहकर टाल दिया। पार्टियां किसने ऑर्गेनाइज की, कौन दोस्त शामिल हुए, सांप कहां से आए, जहर किसने निकाला, सांपों का क्या हुआ झ ऐसे तमाम सवालों के जवाब एल्विश ने नहीं दिए।

चार्जशीट में पुलिस ने बताया है कि एल्विश सीधे किसी संपेरे को नहीं जानता है। वह सीधे राहुल संपेरे से बातचीत नहीं करता था। अपने साथी विनय यादव के जरिए वह ईश्वर यादव के संपर्क में था।

राजस्थान के दौसा में शादी समारोह में फूड पॉइजनिंग से 107 लोग बीमार

दौसा/एजेंसी।

राजस्थान के दौसा जिले के लालसोट क्षेत्र में फूड पॉइजनिंग के चलते 107 लोग बीमार हो गए। बताया जा रहा है कि क्षेत्र के बिलोना गांव में बुधवार की रात भात के कार्यक्रम दौरान इन लोगों ने मिश्री मावा खाया था। लालसोट के मुख्य प्रखंड चिकित्सा अधिकारी (बीसीएमओ) डॉ. पवन जैन ने बताया कि बीती रात बिलोना गांव में एक शादी मे भात का कार्यक्रम चल रहा था। इन लोगों ने कार्यक्रम में मिश्री मावा खाया और कुछ देर बाद पेट दर्द, उल्टी, दस्त की शिकायत होने लगी। बिलोना के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर एक-एक करके फूड प्वाइजन के शिकार लोगों को भर्ती कराया गया। सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र बिलोना पर धीरे-धीरे लोगों की फूड पॉइजनिंग के शिकार लोगों की संख्या बढ़ती गई और बीमारों की संख्या 107 हो गई। उधर 80 लोगों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पर भर्ती कर इलाज किया गया इसके बाद भर्ती मरीजों के लिए बेड कम पडने और हालत गंभीर होने के चलते कुछ मरीजों के जिला अस्पताल लालसोट में रेफर किया गया, जहां 27 लोगों का इलाज किया गया। दौसा के मुख्य चिकित्सा स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सीताराम मीणा, लालसोट के बीसीएमओ सहित विभाग के कई अधिकारी अस्पताल पहुंचे। सीएमएचओ ने बताया कि रात 12 बजे से फूड प्वाइजनिंग के मरीजों का आना शुरू हुआ और तड×के चार बजे तक इन लोगों की संख्या 107 हो गई फिलहाल तमाम भर्ती मरीजों की तबीयत में सुधार होने के चलते सभी को अस्पताल से छुट्टी दे दी गई है । इधर बताया तो यह भी जा रहा है कि बिलोना गांव में अपनी बहन के यहां भात देने आये भातई अपने साथ मिश्री मावा लेकर भाड़ोती से बिलोना आए थे।

छठा चरण : थम गया चुनाव प्रचार का शोर

एजेंसी

नयी दिल्ली। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए छठे चरण का मतदान 25 मई को होगा। छठे चरण के लिए चुनाव प्रचार का शोर आज यानि गुरुवार 23 मई को शाम 6 बजे थम गया। सभी राजनीतिक दलों के लिए प्रचार का आज आखिरी दिन था। 25 मई को छठे चरण में 8 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 58 लोकसभा सीटों पर वोट डाले जाएंगे। छठे चरण में बिहार की 8, हरियाणा की 10, जम्मू-कश्मीर की 1, झारखंड की 4, दिल्ली की 7, ओडिशा की 6, उत्तर प्रदेश की 14 और पश्चिम बंगाल की 8 सीटों पर मतदान किया जाएगा।

● आठ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों की 58 सीटों पर 25 मई को मतदान

आज रवाना होंगी पोलिंग पार्टियां

छठे चरण में 58 सीटों के लिए कुल 900 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं। गुरुवार शाम 5 बजे चुनावी शोर थम जाएगा। इसके बाद शुक्रवार को पोलिंग पार्टियां बूथों के लिए रवाना होंगी। वोटिंग को लेकर निर्वाचन आयोग और पुलिस महकमा तैयारी को अंतिम रूप देने में जुटा है। गर्मी को ध्यान में रखते हुए पोलिंग बूथों पर खास व्यवस्था की जा रही है।

25 मई को इन सीटों पर डाले जायेंगे वोट

छठे चरण में बिहार की 8 सीटों के लिए 89 उम्मीदवार चुनावी मैदान में है। वहीं, जम्मू-कश्मीर में एक सीट के लिए वोटिंग होगी। झारखंड की 4 सीटों के लिए 96 उम्मीदवार चुनावी मैदान में हैं तो दिल्ली की 7 सीटों के लिए 166 उम्मीदवार मैदान में हैं। उत्तर प्रदेश की 14 सीटों के लिए 164 उम्मीदवार मैदान में हैं। पश्चिम बंगाल की 8 सीटों के लिए 81 उम्मीदवार मैदान में है तो ओडिशा की 6 सीटों के लिए 65 उम्मीदवार मैदान में हैं। इस चरण में 58 सीटों के लिए कुल 900 उम्मीदवार के किस्मत का फैसला जनता करेगी।

उत्तराखंड : भारी बारिश के कारण अल्मोड़ा में हाईवे पर आया मलबा, दो घंटे यातायात बंद

नैनीताल/एजेंसी।

उत्तराखंड के अल्मोड़ा जिले के क्वारब में हाईवे पर बुधवार शाम बरसाती नाले के साथ मलबा आने से यातायात ठप हो गया।

जिले में बुधवार शाम पहाड़ी इलाकों में कई जगह जोरदार बारिश हुई। अल्मोड़ा हाईवे पर क्वारब के समीप पहाड़ी से मलबा आ गया, जिससे करीब दो घंटे तक हाईवे बंद रहा। मलबा पास की एक दुकान के भीतर भी घुस गया। वहीं, मुक्तेश्वर में भी जोरदार बारिश हुई है। भीमताल और नैनीताल में हल्की फुहारों से राहत मिली। नैनीताल सहित आसपास के इलाकों में बुधवार सुबह से ही मौसम में नमी थी। इससे जहां तेज गर्मी से राहत महसूस हुई वहीं शाम करीब चार बजे मुक्तेश्वर, क्वारब, रामगढ़ आदि इलाकों में जोरदार बारिश हुई। इससे कई जगह सड़कों पर पानी भर गया। भवाली-अल्मोड़ा हाईवे पर क्वारब पुल के समीप भूस्खलन के कारण गधेरे के साथ पहाड़ी से भारी मलबा आ गया। इससे हाईवे बाधित हो गया। मलबा हाईवे किनारे स्थित ग्राम प्रधान क्वारब नीमा देवी की दुकान में घुस गया। सूचना पर हाईवे खोलने के लिए जेसीबी भेजी गई।

फिलीपींस-भारत के संबंधों व साझेदारी को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता

दक्षिण चीन सागर में तैनाती के दौरान भारतीय जहाजों की फिलीपींस यात्रा पूरी

नयी दिल्ली । एजेंसी

- **द्विपक्षीय बातचीत में नौसेनाओं ने क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा पर प्रतिबद्धता जतायी**
- **फिलीपींस नौसेना कर्मियों ने भारतीय जहाजों का गर्मजोशी से स्वागत किया**

दक्षिण चीन सागर में पूर्वी बेड़े की परिचालन तैनाती के दौरान भारतीय नौसेना के जहाजों दिल्ली, शक्ति और किल्टन ने फिलीपींस की अपनी यात्रा पूरी कर ली है। इस दौरान भारत ने फिलीपींस की नौसेना के साथ सहयोग बढ़ाने पर चर्चा की। द्विपक्षीय बातचीत में दोनों नौसेनाओं ने क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और स्थिरता बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई। फिलीपींस नौसेना के कर्मियों और फिलीपींस में भारत के उच्चायुक्त ने जहाजों का गर्मजोशी से स्वागत किया। भारतीय नौसेना के जहाज दिल्ली, शक्ति और किल्टन ने दक्षिण चीन सागर में भारतीय नौसेना के पूर्वी बेड़े की परिचालन तैनाती के हिस्से के रूप में मनीला का दौरा किया। इस यात्रा ने फिलीपींस के साथ भारत के मजबूत संबंधों और साझेदारी को और मजबूत करने की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया। इस बंदरगाह यात्रा में भारतीय नौसेना और फिलीपींस नौसेना के कर्मियों के बीच विषय वस्तु विशेषज्ञ आदान-प्रदान (एसएमईई), खेल कार्यक्रम, क्रॉस डेक दौरे, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सहयोगी सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रम शामिल थे। ईस्टर्न फ्लीट के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग रियर एडमिरल राजेश धनखड़ और जहाजों के कमांडिंग ऑफिसर्स ने फिलीपीन फ्लीट के कमांडर रियर एडमिरल रेनाटो डेविड और फिलीपीन कोस्ट गार्ड के डिप्टी कमांडेंट फॉर ऑपरेशंस वाइस एडमिरल रोलैंडो लिजोर पुंजालन जूनियर के साथ बातचीत की। इस दौरान सहयोग के अवसरों, आपसी हितों के मामलों और मौजूदा सुरक्षा स्थिति पर व्यापक चर्चा की गई। इस यात्रा ने भारत और फिलीपींस की नौसेनाओं के बीच नौसैनिक सहयोग और अंतर-संचालन को बढ़ाने पर चर्चा का अवसर प्रदान किया।

यह बंदरगाह यात्रा भारत और फिलीपींस के बीच मजबूत कूटनीतिक और रक्षा संबंधों का प्रमाण है। यह भारत की अपनी 'एक्ट ईस्ट' और सागर नीतियों के अनुरूप क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन है।

छोटे उद्योगों के लिए नयी परिभाषा लिखी मोदी ने : पीयूष गोयल

नयी दिल्ली/एजेंसी। भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता और केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने छोटे कारोबारियों के लिए नयी परिभाषा लिखी है, जिससे उन्हें अनेक लाभ मिल रहे हैं।

गोयल ने दिल्ली में चांदनी चौक संसदीय क्षेत्र से भाजपा प्रत्याशी खंडेलवाल के समर्थन में वजीरपुर में एक जनसभा में हिस्सा लिया और लोगों से भाजपा के पक्ष में मतदान करने की अपील की। उन्होंने कहा कि मोदी के नेतृत्व में देश के व्यापारियों और लघु उद्योग ने विकास की नयी परिभाषा लिखी है और आने वाले समय में भी देश का व्यापार और लघु उद्योग आगे बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यापारी संगठन और लघु उद्योगों से विचार-विमर्श कर योजनाएं बनाई जाएंगी जिसके दूरगामी सकारात्मक परिणाम होंगे। खंडेलवाल ने कहा, 'मेरा विजन चांदनी चौक लोकसभा को देश में एक मॉडल क्षेत्र के रूप में विकसित करना है। मेरा चुनाव में विजयी होने के बाद मैं सांसद के रूप में सड़क के फुटपाथ पर बैठूंगा और जन चौपाल लगाऊंगा जिससे लोगों से मेरा संपर्क और संवाद लगातार बना रहे। मेरा एक मात्र उद्देश्य है कि मोदी की गारंटी को आप तक पहुंचा कर क्षेत्र के विकास का मार्ग सुनिश्चित कर सकूं।'

घोटालों में धूमिल हुई नेपाल सरकार की छवि

नेपाल में संसदीय व्यवस्था है। इसमे सदन का बहुमत ही महत्वपूर्ण होता है। सरकार का अस्तित्व बहुमत पर आधारित होता है। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल 'प्रचंड' ने संसद से चौथी बार विश्वास का मत हासिल किया है। लेकिन लोकतन्त्र की सफलता इतने मात्र से प्रमाणित नहीं होती। नेपाल की सरकार ने सदन में बहुमत साबित किया। लेकिन सड़क पर उसके प्रति लगातर अविश्वास बढ़ रहा रहा है। घोटालों के आरोप से सरकार की छवि धूमिल हो चुकी है। विपक्षी दलों के हंगामें और नारेबाजी के बीच प्रधानमंत्री प्रचंड ने विश्वास का मत हासिल किया।

प्रधानमंत्री पुष्पकमल दाहाल प्रचंड ने संसद में विश्वास मत हासिल करने के लिए प्रस्ताव पेश किया। गतिरोध के बीच हुए मतदान प्रक्रिया का विपक्षी दलों नेपाली कांग्रेस, राष्ट्रीय प्रजातंत्र पार्टी, जनता समाजवादी पार्टी नेपाल, लोकतांत्रिक समाजवादी पार्टी ने बहिष्कार किया। प्रधानमंत्री प्रचंड के पक्ष में मतदान करने वालों में उनकी पार्टी माओवादी के बत्तीस नेकपा एमाले के पछहत्तर, राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी के इक्कीस,एकीकृत समाजवादी पार्टी के दस, जनमत पार्टी के छह नागरिक उन्मुक्ति पार्टी के तीन और कुछ अन्य छोटे दलों के सांसद शामिल हैं। जिन पार्टियों ने प्रधानमंत्री को सरकार बचाने में सहयोग किया, उन्होंने भी अपनी आपत्ति दर्ज़ कराई है। मतलब सरकार का समर्थन करने वाले भी उससे खुश नही हैं। ऐसे दल सरकार पर दबाव बना रहे हैं। प्रधानमंत्री किसी भी तरह अपनी सरकार को बचाने में लगे है। यही उनका एकमात्र एजेंडा रह गया है। सड़क पर लोगो सरकार के विरोध में प्रदर्शन कर रहे हैं। सत्तारूढ़ गठबंधन के प्रमुख घटक दल एकीकृत समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष माधव कुमार नेपाल ने कहा है कि गठबंधन में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा है। पार्टी के केन्द्रीय कमेटी की बैठक में माधव नेपाल ने कहा कि प्रधानमंत्री प्रचंड और केपी शर्मा ओली की तरफ से गठबंधन धर्म का पालन नहीं किया जा रहा है। जनता समाजवादी पार्टी के विभाजन के लिए प्रधानमंत्री प्रचंड और ओली को दोषी बताता गया था। प्रधानमंत्री पर अपने ही सत्तारूढ़ घटक दल का विभाजन करवाकर मंत्रियों को बाहर निकालने के आरोप है।

नेपाल के सत्तारूढ़ गठबंधन में असंतोष बढ़ता जा रहा है। सरकार के घटक दल ही इस गठबंधन के बारे में विरोधी बयान देने 'लगे हैं। एक सत्तारूढ़ दल का विभाजन होने के बाद अब दूसरे एकीकृत समाजवादी पार्टी ने सरकार से समर्थन वापस लेने का संकेत दिया। सत्ता पक्ष ने अपने ही गठबंधन की एक प्रदेश सरकार गिरा दी है। मधेश प्रदेश में जनता समाजवादी पार्टी नेपाल के नेतृत्व में बनी सरकार से सत्ता में शामिल माओवादी और एमाले ने समर्थन वापस ले लिया है। समर्थन वापसी के कारण अपनी सरकार गिरने पर जसपा नेपाल के अध्यक्ष उपेन्द्र यादव ने इसे विश्वासघात बताया है। उन्होंने कहा कि सरकार में शामिल प्रमुख घटक दल होने के बावजूद प्रधानमंत्री ने पहले उनकी अनुपस्थिति में पार्टी में विभाजन करवाया और उसके बाद आज एक प्रदेश में रही सरकार को गिरा दिया। उपेन्द्र ने इसे प्रधानमंत्री प्रचंड की राजनीतिक बेइमानी करार दिया है। इतना ही नहीं प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल के इस्तीफे की मांग को लेकर डॉ. गोविंद केसी पशुपतिनाथ मंदिर क्षेत्र में आमरण अनशन कर रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री प्रचण्ड को युद्ध अपराधी घोषित करने की मांग की है। कहा गया को सशस्त्र संघर्ष के दौरान मानवता विरोधी, जघन्य अपराधों और युद्ध अपराधों में शामिल एक प्रमुख नेता के रूप में अपनी स्थिति के कारण प्रचंड को प्रधानमंत्री पद से तत्काल इस्तीफा देना चाहिए।

सरकार की ओर से यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि संक्रमणकालीन न्याय की प्रक्रिया निष्पक्ष तरीके से संपन्न हो और इस तरह से पूरी की जाए कि पीड़ितों को न्याय का एहसास हो। लेकिन जब युद्ध अपराधी जब सत्ता का नेतृत्व कर रहा हो तो उससे न्याय की अपेक्षा नहीं की जा सकती है। सशस्त्र द्वंद्व काल के समय पीडित लाखों नेपाली जनता आज भी न्याय का इंतजार कर रही है और युद्ध अपराध करने वाले सत्ता में बैठ कर पीडित के साथ अन्याय कर रहे हैं। प्रधानमंत्री प्रचण्ड अपनी सत्ता बचाने के लिए विभिन्न हथकंडा अपना रहे हैं जिससे देश में राजनीतिक अस्थिरता आ गई है। उन्होंने कहा कि सरकार के संरक्षण में ही भ्रष्टाचार फल-फूल रहा है। जनता बुनियादी सुविधा के लिए भी तरस रही है। सरकार संस्थागत रूप से भ्रष्टाचार में लिप्त है। देश में करोडों अरबों रूपएके भ्रष्टाचार का दिन प्रतिदिन खुलासा हो रहा है। सरकार भ्रष्टाचारियों का समर्थन ही नहीं कर ररी है बल्कि उनका संरक्षण भी कर रही है। सहकारी घोटाले की जांच के लिए संसदीय समिति की मांग पर सदन से लेकर सड़क तक सरकार को घेरा जा रहा है। शुरुआत में सत्तापक्ष के साथ संसदीय जांच समिति पर सहमति हो गई थी। लेकिन सदन में गृहमंत्री के बयान से माहौल और अधिक बिगड़ गया है। नेपाल में विपक्षी दल गृहमंत्री लामिछाने को संसद के बजट सत्र में अपना पक्ष रखने देने के लिए तैयार हो गए थे। सहकारी घोटाले में अपनी संलिप्तता के आरोप गृह मंत्री लामिछाने पर हैं।

सहकारी घोटाला कांड में फंसे नेपाल के उपप्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री रवि लामिछाने के इस्तीफे की मांग जोर पकड़ रही है। रवि लामिछाने के खिलाफ विपक्ष ने कांग्रेस संसद के दोनों सदनों से लेकर सड़क तक मोर्चा खोल दिया है। सहकारी ठगी मामले में सुप्रीम कोर्ट ने उपप्रधानमंत्री तथा गृहमंत्री रवि लामिछाने के खिलाफ रिट दायर करने को मंजूरी दे दी है। कोर्ट के आदेश पर शुक्रवार को रिट दायर की जाएगी, जिसके बाद अगले हफ्ते से इस पर सुनवाई किए जाने की संभावना है। रवि लामिछाने के खिलाफ कई सहकारी संस्थाओं में आर्थिक अनियमितता कर 95 करोड़ रुपये से अधिक का घोटाला करने का आरोप है। सदन से लेकर सड़क तक विपक्ष आंदोलन कर रहा है। इस बीच सुप्रीम कोर्ट ने गृहमंत्री रवि लामिछाने को क्लीन चीट देने वाले सरकार के महान्यायाधिवक्ता दीनमणि पोखरेल के खिलाफ भी रिट दायर करने को कहा है।

चुनाव में नेताओं के इन दावों को कैसे देखें

अवधेश कुमार

चुनाव के दौरान पक्ष और विपक्ष द्वारा विजय एवं सीटों के आंकड़ों को लेकर अपने अनुसार दावा किया जाना अस्वाभाविक नहीं है। ऐसा ही इस चुनाव के दौरान हो रहा है। नेताओं और पार्टियों के दावों से आम मतदाता एक सीमा तक प्रभावित होते हैं। इसलिए तथ्यों ,आंकड़ों तथा चुनाव के माहौल के आधार पर इनका विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। मतदान जब धीरे-धीरे समाप्ति की ओर है हमारे सामने अलग-अलग दावे आ गए हैं। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश में सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने कहा है कि उन्हें 79 सीटें प्राप्त हो रही है। राहुल गांधी कह रहे हैं कि 4 जून के बाद नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री नहीं रहेंगे और भाजपा की सिटें डेढ़ सौ तक सिमट जाएंगी। ममता बनर्जी ने भाजपा को 200 से 220 सीटों तक सिमटा दिया है। अरविंद केजरीवाल कह रहे हैं सरकार आईएनडीआईए की बनेगी क्योंकि भाजपा की सिटें उत्तर प्रदेश, बिहार, दिल्ली, हरियाणा, गुजरात, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, कर्नाटक, महाराष्ट्र, झारखंड सब जगह घट रही है। इतने राज्यों में अगर भाजपा की सीटें काफी संख्या में घट जाए तो वाकई उसका सरकार बनना मुश्किल होगा। क्या वाकई अब तक के हुए मतदान , उसके वातावरण , पिछले आंकड़े आदि को आधार बनाकर इस तरह का निष्कर्ष निकाला जा सकता है?

सबसे पहले उत्तर प्रदेश को ही देखें। सपा को सबसे ज्यादा 2004 में 35 सीटें मिली थीं। तब उसे 26.74 प्रतिशत वोट मिला था। न उसके पहले न उसके बाद कभी वह यह प्रदर्शन दोहरा सकी। उस समय बसपा 24. 6 7 प्रतिशत मत पाकर 19 सीटें जीती , जबकि भाजपा 22.5 प्रतिशत के साथ 10 सीटों पर सिमट गई। वह समय उत्तर प्रदेश में विखंडित राजनीति का था। तब सपा, बसपा और भाजपा मुख्य शक्ति थी और कांग्रेस हाशिये।1993 से उप्र राजनीतिक अस्थिरता और बहुमतविहीनता के दौर से गुजर रहा था जो 2007 में मायावती के नेतृत्व में बसपा को बहुमत मिलने के साथ समाप्त हुई। तब से अब तक प्रदेश की जनता एक पार्टी को बहुमत देने के लिए मतदान कर रही है। सन 2022 के विधानसभा चुनाव में भाजपा विरोधी मतों का ध्रुवीकरण सपा के पक्ष में हुआ तब उसे 32.06 प्रतिशत मध्य एवं 111 सिटें प्राप्त हुई। 2019 लोकसभा चुनाव में सपा बसपा के साथ मिलकर लड़ी तब भी भाजपा ने 49.6 प्रतिशत मत और 62 सीटें प्राप्त किया। सपा को 18.11 प्रतिशत मत एवं पांच सीट और बसपा को 19.4 3 प्रतिशत मत एवं 10 सीटें मिली। कांग्रेस 6.36 प्रतिशत मत के साथ एक सीट तक सिमट गई थी। प्रश्न है कि जब पहले उत्तर प्रदेश में ऐसा नहीं हुआ तो आज क्या बदल गया है कि भाजपा को लोग पूरी तरह ध्वस्त कर देंगे और उनकी जगह सपा और कांग्रेस के गठबंधन को सिर पर उठा लेंगे? कांग्रेस इस समय उत्तर प्रदेश में व्यवहार में प्रभावहीन पार्टी है। विधानसभा चुनाव में उसे केवल दो प्रतिशत से थोड़ा अधिक वोट मिला था। भाजपा को जिन कारणों से विधानसभा चुनाव एवं लोकसभा में वोट मिलते रहे हैं वो कारण क्या खत्म हो गए? लोकसभा चुनाव में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व और विधानसभा में योगी आदित्यनाथ का नेतृत्व, फिर हिंदुत्व, कानून और व्यवस्था, विकास, समाज के निचले तबके तक सरकारी कल्याण कार्यक्रमों का लाभ पहुंचाना आदि प्रमुख कारण रहे हैं। यह कारण आज भी विद्यमान हैं। दूसरी ओर सपा ने प्रदेश में ऐसा कुछ नहीं किया है जिससे प्रदेश के बहुमत को लगे कि राष्ट्रीय राजनीति और सत्ता का दायित्व ही उन्हें ही सौंपना चाहिए। इसके उलट माफियाओं की मृत्यु पर पूरे सपा का रवैये से जनता के बड़े वर्ग का निष्कर्ष यही है की योगी आदित्यनाथ है अपराधियों माफियाओं और गुंडो के विरुद्ध कार्रवाई कर सकते हैं सपा या अन्य दल नहीं। इसलिए इस दावे को कोई भी व्यावहारिक और विवेकशील व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता। अगर इसी पहलू को राष्ट्रीय स्तर पर विस्तारित करें तो मूल प्रश्न यही उठेगा कि जिन कारणों और सामूहिक मनोविज्ञान के तहत देश के लोगों ने 2014 में स्थापित राजनीतिक नेताओं और शक्तियों को उखाड़ कर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा को बहुमत दिया क्या वे कारण और उसे तरह के मनोविज्ञान खत्म हो गए? निस्संदेह, 10 वर्षों के शासन के बाद घनघोर समर्थकों, उत्साही कार्यकर्ताओं -नेताओं के अंदर भी कई प्रकार का असंतोष, निराशा और उदासीनता आती है। क्षेत्र के सांसद अगर लगातार चुनाव लड़ रहे हैं और उनका प्रदर्शन लोगों की उम्मीद के अनुरूप नहीं हो, जिन विचारधारा के आधार पर समर्थन मिला उसके प्रतिरूप वे नहीं दिखते हैं तो उससे भी असंतोष और क्षोभ पैदा होता हैं। 2014 में भाजपा को नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जनता का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों प्रकार का मत मिला था। तत्कालीन शासन, उत्तर, पश्चिम और पूरब के राज्यों की पार्टियों, नेताओं की राजनीति और सत्ता के विरुद्ध लोगों का विद्रोह था तो विचारधारा व व्यवहार के आधार पर मोदी एवं भाजपा को व्यापक समर्थन। आप देखेंगे कि यूपीए सरकार के दौरान राष्ट्रीय एवं प्रदेशों के स्तर पर सरकारों के निराशाजनक प्रदर्शनों नेताओं के अस्वीकार्य व्यवहारों, अतिवादी अल्पसंख्यकवाद, सेक्युलरवाद के नाम पर अलग प्रकार का कट्टरवाद,आतंकवादी हमले का उचित उत्तर न दिया जाना, विदेश नीति पर भारत की कमजोरी, अर्थ के क्षेत्र में निराशाजनक प्रदर्शनों आदि के साथ हिंदुत्व, हिंदुत्व अभिप्रेरित राष्ट्र चेतना तथा नरेंद्र मोदी के एक नेता के रूप में गुजरात में प्रदर्शन और उनका व्यक्तित्व लोगों के लिए आकर्षण का कारण बना। 2019 में मतदाताओं की सोच ज्यादा सशक्त हुई और परिणामस्वरूप भाजपा को ज्यादा सीटें मिलीं । 2024 में वे सारे कारण खत्म नहीं हुए हैं। विपक्षी पार्टियां नए सिरे से अल्पसंख्यकवाद को बढ़ावा दे रही है। साथ ही उनके पास एक देश के रूप में भारत के विकास, इसकी सुरक्षा, विदेश नीति को लेकर दूरगामी लंबी विचारधारा और नीति सामने नहीं है। हिंदुत्व और हिंदुत्व अभिप्रेरित राष्ट्रवाद की विचारधारा पर नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र और भाजपा की प्रदेश सरकारों ने काफी काम किया है। इसलिए उम्मीदवारों , गठबंधन के साथियों के साथ-साथ कार्यकर्ताओं -नेताओं की अभिप्सायें पूरी होने के मामले में कमजोर होते हुए भी ऐसा नहीं लगता कि राष्ट्रव्यापी स्तर पर इसके समानांतर दूसरे विकल्प के हाथों देश सौंपने का निर्णय मतदाता करेंगे। एक दो राज्यों में भाजपा का प्रदर्शन कमजोर हो सकता है किंतु कुछ राज्यों पश्चिम बंगाल , उड़ीसा और तेलंगाना में भाजपा का प्रदर्शन काफी बेहतर हो सकता है।

विरोधी पार्टियां भाजपा के लिए तो बता रही हैं कि उन्हें बहुमत से कम सीटें मिलेंगी लेकिन वो कितनी सीटें प्राप्त करेंगे यह कोई नहीं बता रहा। सबसे बड़ी पार्टी कांग्रेस को ही लीजिए। 2014 और 2019 के चुनावों में उसे 19 और 20 प्रतिशत के बीच वोट मिले थे। 2023 के विधानसभा चुनावों में कर्नाटक और हिमाचल में उसे सफलता मिली लेकिन गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, त्रिपुरा जैसे राज्यों में वह बुरी तरह विफल रही है। उसका वोट प्रतिशत और सीट अचानक किस आधार पर इतना बढ़ जाएगा कि वह भाजपा के निकट पहुंच जाएगी? दक्षिण के तीन राज्यों केरल, तेलंगाना और कर्नाटक में उसे कितनी सीटें मिले मिल सकती है जिससे यह मान लिया जाए कि कांग्रेस 150 या उससे ज्यादा स्थान प्राप्त कर लेगी? केरल में उसे पहले ही सर्वाधिक 15 और गठबंधन को 19 सीटें प्राप्त है। कर्नाटक में भाजपा अभी भी एक बड़ी शक्ति है और कांग्रेस के लिए लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व के रहते उसे पूरी तरह पराजित करना संभव नहीं दिखता। दिल्ली की ओर लौटे तो विधानसभा चुनावों में जबरदस्त प्रदर्शन करने के बावजूद अरविंद केजरीवाल के नेतृत्व में आप मतों के मामले में कभी भी भाजपा के आसपास नहीं पहुंच सकी। कांग्रेस22.51 प्रतिशत और आप 18.11 प्रतिशत मत मिलाकर भी पिछले चुनाव में भाजपा के 56.86 प्रतिशत से काफी कम है। अरविंद के केजरीवाल को प्रचार के लिए जेल से अंतरिम जमानत मिलने के बाद उनके उम्मीदवारों, नेताओं, कार्यकर्ताओं में थोड़ा उत्साह है किंतु इसका चुनाव पर व्यापक असर पड़ेगा और वह भी स्वाति मालीवाल के विरुद्ध मुख्यमंत्री आवास पर हिंसा के बाद ऐसी कल्पना आसानी से नहीं की जा सकती। बिहार में वर्तमान गठबंधन 2019 में भी था लेकिन राजग ने 39 सीटें प्राप्त की। नीतीश कुमार की वापसी को भाजपा, उसके समर्थकों, कार्यकर्ताओं और राजग के मतदाताओं ने बहुत सकारात्मक रूप से नहीं लिया है। बावजूद वो प्रतिशोध के भाव में आकर राजद, कांग्रेस व अन्य दलों के गठबंधन के लिए भारी संख्या में मतदान करेंगे ऐसे भी जमीनी हालात नजर नहीं आते। राष्ट्रीय स्तर पर लगभग तीन प्रतिशत कम मतदान एवं कई राज्यों गुजरात मध्य प्रदेश आदि में मतदान में भारी गिरावट अवश्य हुई है पर अभी तक चुनाव में ऐसी प्रवृत्तियां नहीं दिखी हैं जिनके आधार पर निष्कर्ष निकाल दिया जाए की आम जनता गुस्से में नरेंद्र मोदी भाजपा और राजग के विरुद्ध तथा आईएनडीआईए के पक्ष में एकमुश्त मतदान कर रही है।

लोक कल्याण से प्रेरित पत्रकारिता

डॉ. दिलीप अग्निहोत्री

मीडिया का क्षेत्र बहुत व्यापक हो गया है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक के साथ अब सोशल मीडिया की भी बाढ़ है। लेकिन यह सब तभी तक सार्थक है, जब तक इनके सामाजिक सरोकार भी है। इसके निर्वाह के लिए भारतीय संस्कृति के प्रति आग्रह आवश्यक है। भारत में देवर्षि नारद ने ही पत्रकारिता का प्रादुर्भाव किया था। उनके चौरासी सूत्र आधुनिक पत्रकारिता के संदर्भ में भी प्रासंगिक हैं। उनकी सभी बात आज की मीडिया पर न केवल लागू होती है, बल्कि उनपर अमल से मीडिया को आदर्श रूप दिया जा सकता है। लेकिन आधुनिक वामपंथी खेमे पत्रकारों ने भारतीय संस्कृति की घोर अवहेलना की। उदारीकरण और वैश्वीकरण ने नया संकट पैदा किया है। ऐसे में राष्ट्रवादी पत्रकारिता के महत्व को बनाये रखने की चुनौती है। इसमें धीरे धीरे सफलता भी मिल रही है। देश इस समय आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है। यह संयोग है कि इस दौरान राष्ट्रवादी विचार से प्रेरित अनेक संगठन व संस्थान भी अपना अमृत वर्ष मना रहे हैं। कुछ समय पहले विद्यार्थी परिषद द्वारा अपनी स्थापना के सात दशक होने पर ध्येय यात्रा पुस्तक का लोकार्पण नई दिल्ली में किया गया। राष्ट्र भाव की पत्रकारिता के अनुरूप कार्य करने की आवश्यकता है। भविष्य की चुनौतियों का समाना करते हुए लोगों तक गुणवत्तापूर्ण समाचार प्रेषित करना आवश्यक है। भारतीयता को विशेष महत्व देते हुए सत्य, संवाद और सेवा को अपना ध्येय बनाना होगा।वर्तमान समय में पत्रकारिता कई चुनौतियों का समाना कर रही है। प्रिंट, विजुअल और डिजिटल मीडिया के साथ ही लोगों का दृष्टिकोण बदला है। इन चुनौतियों का सामना करते हुए हुए राष्ट्रवादी पत्रकारिता प्रगति करेगी। पत्रकारिता को धर्म मानकर काम करने वाले ही सफल होते है। राष्ट्रवादी पत्रकारों ने इसी विचार के अनुरूप कार्य किया है। पत्रकारिता के क्षेत्र में आदर्श अपेक्षित हैं। उनके पालन से ही समाज व राष्ट्र का हित सुनिश्चित होता है। इन आदर्शों की अवहेलना नहीं होनी चाहिए। समाचार सम्प्रेषण में स्पष्टता व गुणवत्ता रहनी चाहिए। इससे प्रामाणिकता कायम होती है। साथ ही समाज का भी कल्याण होता है। उसी के आधार पर देश का लोकतंत्र स्वस्थ बना रहेगा। देश के लोकतंत्र का स्वस्थ बने रहना समग्र विकास के लिए आवश्यक शर्त है। समाज जागरूक होकर सही दिशा में चलता है तभी लोकतंत्र सफल होता है। इसी धारणा से कार्य करना चाहिए।आज ऐसी ही ध्येयवादी पत्रकारिता की आवश्यकता है। आज के समय में यह भूमिका और भी अधिक बड़ी हो जाती है। आने वाले समय में भारत का सटीक और सही चित्रण विश्व पटल में रखने की बड़ी भूमिका निभानी होगी। वस्तुतः भारतीय पत्रकारिता का वामपंथी विचारों ने नुकसान किया है। इसके लिए वामपंथियों ने अपना स्वरूप भी बदला है। कार्ल मार्क्स ने आर्थिक आधार समाज की व्याख्या की थी। उसने समाज को दो वर्गों में बांटा था। पहला पूंजीपति और दूसरा सर्वहारा। पूंजीपति सदैव सर्वहारा का शोषण करता है। दोनों में संघर्ष चलता रहता है। यह वामपंथियों, मार्क्सवादियों, माओवादियों, नक्सलियों का मूल चिंतन रहा है। इसमें अनेक बदलाव भी होते रहे। भारत के वामपंथियों ने मीडिया में अपना सांस्कृतिक विचार चलाया है। इसमें मार्क्स का आर्थिक चिंतन बहुत पीछे छूट गया। पूंजीपति और सर्वहारा की बात बन्द हो गई। उन्होंने हिन्दू और मुसलमानों की बात करना शुरू कर दिया। लेकिन वर्ग संघर्ष के चिंतन को बनाये रखा। ये कथित प्रगतिशील पत्रकार हिन्दू और मुसलमानों के संघर्ष की रचना करने लगे। इन्होंने यह मान लिया इनका वर्ग संघर्ष चलता रहेगा।

वामपंथी रुझान वाले यहीं तक सीमित नहीं रहे। उन्होंने सवर्ण और दलित के बीच भी वर्ग को हवा देना शुरू किया। वामपंथी रूझान की पत्रकारिता ने हिंदुओं के विरोध को अपना पैशन बना लिया। वर्ग संघर्ष के सिद्धांत पर उन्होंने यह विचार फैलाया की हिन्दू शोषक और मुसलमान शोषित है। इसीलिए पश्चिम बंगाल और केरल की राजनीतिक हिंसा उन्हें दिखाई नहीं देती। किंतु कुछ लोग मजहब के आधार पर समाज विरोधी कार्य करें, यह कानून को अपने हाथ में लेने की कोशिश करें, तो इसे भगवा आतंकवाद के रूप में प्रसारित किया जाता है। स्वतंत्रता के बाद से ही वामपंथी विचारकों को लेखन के लिए प्रोत्साहित किया गया। उनके द्वारा बनाये गए पाठ्यक्रम को शिक्षा में चलाया गया। इसमें भारत के प्रति हीन भावना का विचार था। प्राचीन भारतीय विरासत को खारिज किया गया। यह पढ़ाया गया कि विदेशी शासन ने भारत को सभ्य बनाया। जबकि वह स्वयं सभ्यताओं के संघर्ष करने वाले लोग थे। भारत तो सबके कल्याण की कामना करने वाला देश रहा है।

देवर्षि नारद का तीनों लोकों में समान सहज संचार था। देवऋषि नारद अन्य ऋषियों, मुनियों से इस प्रकार से भिन्न हैं कि उनका कोई अपना आश्रम नहीं है।वे निरंतर प्रवास पर रहते हैं तथा उनके द्वारा प्रेरित हर घटना का परिणाम लोकहित से निकला।इसलिए वर्तमान संदर्भ में यदि नारदजी को आजतक के विश्व का सर्वश्रेष्ठ लोकसंचारक कहा गया।नारद द्वारा रचित चौरासी भक्ति सूत्रों का यदि सूक्ष्म अध्ययन करें तो केवल पत्रकारिता ही नहीं पूरे मीडिया के लिए शाश्वत सिद्धांतो का प्रतिपालन दृष्टिगत होता है। उनके द्वारा रचित भक्ति सूत्र अनुसार जाति,विद्या,रूप, कुल,धन,कार्य आदि के कारण भेद नहीं होना चाहिए। समाचारों का संवाहन ही नारद के जीवन का मुख्य कार्य था, इसलिए उन्हें आदि पत्रकार मानने में कोई संदेह नहीं है। आज के संदर्भ में इसे हम पत्रकारिता का उद्देश्य मान सकते हैं। समाचारों के संवाहक के रूप में नारद की सर्वाधिक विशेषता है उनका समाज हितकारी होना। पत्रकारिता का धर्म समाज हित है। माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार पर देवर्षि नारद का चित्र एवं उनके भक्ति सूत्र उकेरे गए हैं। विश्वविद्यालय के द्वार पर प्रदर्शित नारद भक्ति सूत्र बहुत महत्वपूर्ण हैं। दरअसल, उन सूत्रों में पत्रकारिता के आधारभूत सिद्धांत शामिल हैं। ये सूत्र पत्रकारिता के विद्यार्थियों को दिशा देने वाले हैं। पहले सूत्र में लिखा है-'तल्लक्षणानि वच्यन्ते नानामतभेदात।' अर्थात मतों में विभिन्नता एवं अनेकता है। 'विचारों में विभिन्नता और उनका सम्मान' यह पत्रकारिता का मूल सिद्धांत है। इसी तरह दूसरा है-'तद्विहीनं जाराणामिव।' अर्थात वास्तविकता (पूर्ण सत्य) की अनुपस्थिति घातक है।

कांग्रेस और तृणमूल कांग्रेस के हिन्दू विरोध की उग्रता

ललित गर्ग

लोकसभा चुनाव के दो चरण शेष रहे हैं, चुनाव प्रचार चरम पर है। सभी राजनीतिक दल अपनी बढ़त बनाने के लिये कुछ अतिशयोक्तिपूर्ण करने का प्रयास करते हुए राष्ट्र की एकता-अखण्डता एवं बहुसंख्यक हिन्दू धर्म विरोधी स्वरों को बुलंद किये हुए है और अपनी मर्यादाओं को भूल रहे हैं। विशेषतः इंडिया गठबंधन से जुड़े दल एवं बाहर से समर्थन देने की बात करने वाले दल ऐसा दूषित प्रचार कर रहे हैं, जिससे न केवल लोकतांत्रिक मूल्यों का हनन हो रहा है बल्कि ऐसे दलों को राजनीतिक लाभ की बजाय नुकसान होने की संभावनाएं प्रबल हो रही है। इन चुनावों में कांग्रेस, तृणमूल कांग्रेस एवं इंडिया गठबंधन के अन्य दल हिन्दुओं से, हिन्दू मन्दिरों-भगवानों-संतों एवं हिन्दू पर्वो से नफरत का बिगुल हर मोड़ पर बजाते रहे हैं जो हर रोज सामने आ रहा है। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने अपनी राजनीतिक जमीन बचाने के लिए और अपने वोट बैंक को खुश करने के लिए हिन्दू संतों को राजनीति में घसीटने की कोशिश की है। उन्होंने रामकृष्ण मठ, रामकृष्ण मिशन और भारत सेवाश्रम संघ से जुड़े संतों पर निशाना साधते हुए कहा है कि ये लोग भाजपा के लिए काम कर रहे हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण के लिये ओबीसी आरक्षण पर पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्णय पर कानून की धज्जियां उडाते हुए उंगली उठाई है। इस प्रकार कानून की अवमानना वह नेता ही खड़ी कर सकता है, जिसे एक खास वर्ग के वोट चाहिए। संतों को लेकर राजनीतिक टिप्पणी करना, निःसंदेह आपत्तिजनक है एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस हिन्दुओं को अपने ही देश में सेकेंड क्लास सिटिज़न एवं अल्पसंख्यक बनाना चाहती है। मुस्लिम तुष्टीकरण की इन दलों की सोच एवं नीति न केवल उनके घोषणा-पत्रों में बल्कि उनके बयानों में स्पष्ट झलक रही है। सभी विपक्षी दलों ने मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति की है, राजनीतिक दलों का एकतरफा रवैया हमेशा से समाज को दो वर्गो में बांटता रहा है एवं सामाजिक असंतुलन तथा रोष का कारण रहा है। बदले हुए राजनीतिक हालात इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि किसी भी एक वर्ग की अनदेखी कर कोई भी दल राजसत्ता का आनंद नहीं उठा सकता। लेकिन लगातार जीत की ओर बढ़ रहे भाजपा को हराने के लिये इन दलों को मुस्लिम वोटों का ही सहारा नजर आ रहा है, जिसके चलते ये हिन्दू विरोध को प्रचंड किये हुए।

ममता बनर्जी ने अपने शासन में मुस्लिमों को खुश करने एवं उनके वोटों को अपने पक्ष में करने के लिये हिन्दू विरोध का कोई मौका नहीं छोड़ा है। ममता ने रामकृष्ण मठ, मिशन और भारत सेवाश्रम संघ पर झूठा एवं भ्रामक आरोप लगाया है कि ये हिन्दू संगठन भाजपा के पक्ष में काम कर रहे हैं, जबकि इन संगठनों की ओर से एक बार भी भाजपा के पक्ष में मतदान करने का आह्वान नहीं किया गया है। दूसरी तरफ पश्चिम बंगाल में इस्लामिक संगठनों एवं चर्चों के द्वारा भाजपा के विरोध में किसी एक विशेष दल के पक्ष में मतदान करने के प्रकरण बार-बार सामने आये हैं। चुनावों को धार्मिक एवं साम्प्रदायिक रंग देने की इन विडम्बनापूर्ण स्थितियों पर आज तक ममता बनर्जी ने एक भी बयान नहीं दिया है। इसलिए भी कहा जा सकता हैं कि बिना किसी प्रमाण हिन्दू संतों पर निशाना साधने का

अभिप्राय यही है कि ममता बनर्जी की निगाहें कहीं और है निशाना कहीं और है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा ममता बनर्जी पर संतों को धमकाने का आरोप निराधार नहीं है। क्योंकि एक संत कार्तिक महाराज ने मुख्यमंत्री ममता को कानूनी नोटिस भेज कर कहा है कि ममता बनर्जी के बयान निराधार, झूठे और अपमानजनक है।

पश्चिम बंगाल ही नहीं, अन्य गैर-भाजपा सरकारों के प्रांतों में हिन्दुओं को प्रताड़ित करने के घटनाक्रम सामने आते रहे हैं। पश्चिम बंगाल में तो हिन्दुओं के खिलाफ तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ताओं का उग्र और हिंसक प्रदर्शन होता रहा हैं। पिछले कुछ सालों से हमेशा यह देखा गया है कि तृणमूल कांग्रेस के कार्यकर्ता सत्ता पाकर भाजपा समर्थकों के साथ किस प्रकार का व्यवहार करते हैं। वर्ष 2021 में भी तृणमूल कांग्रेस के जीतने के बाद राज्य में बवाल हुआ था और पंचायत चुनाव जीतने के बाद भी उसके कार्यकर्ताओं ने हिंसक उत्पात मचाया था। उस समय भाजपा कार्यकर्ताओं के घरों को खोज-खोजकर हमले हुए थे। ऐसे स्थिति में और ऐसे कार्यकर्ताओं के बीच मुख्यमंत्री ममता बनर्जी का हिन्दू संगठनों एवं धर्मगुरुओं के भाजपा के पक्ष में होने का बयान संतों के लिए जान तक का खतरा पैदा कर सकता है। ऐसा हुआ भी है, ममता बनर्जी के बयान के बाद कुछ हमलावर जलपाईगुड़ी स्थित रामकृष्ण मिशन के आश्रम में घुस गए। उन्होंने भिक्षुओं पर हमला किया, सीसीटीवी आदि तोड़ दिए। याद हो कि पश्चिम बंगाल की राजनीति में पहली बार संतों पर दोष लगाकर उनके खिलाफ माहौल बनाने का काम नहीं हुआ।

मुस्लिम वोटों को आकर्षित करने के लिये इंडिया गठबंधन के दल विशेषतः कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस अल्पसंख्यकों को भी सपोर्ट नहीं कर पा रहे हैं। अल्पसंख्यकों में सिख, पारसी, यहूदी, जैनी, बौद्ध आदि धर्म आते हैं, लेकिन कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस सिर्फ और सिर्फ मुस्लिम परस्ती करते आई है। ओबीसी आरक्षण पर पश्चिम बंगाल की ममता सरकार ने जिस तरह से कलकत्ता हाईकोर्ट के निर्णय पर उंगली उठाई है, उससे तो यही लगता है कि राजनीतिक वोट बैंक के लिए संविधान की जितनी अवमानना की जा सकती है, वह की जाती रहेगी। सामनेवाले को घेरने के लिए उसी संविधान की आड़ भी ली जाएगी। ममता ने मुस्लिमों को ओबीसी सर्टिफिकेट देकर उन्हें तरह-तरह से लाभ पहुंचाने का षड़यंत्र किया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चुनावी रैलियों में इंडी गठबंधन के सत्ता में आते ही एससी, एसटी और ओबीसी के आरक्षण को मुस्लिमों को देने की बात कह रहे हैं, वह भी इस घटना से साफ होता नजर आ रहा है। धर्म के आधार पर आरक्षण भारतीय संविधान में निहित मूल्यों और सिद्धांतों के खिलाफ है। कलकत्ता हाईकोर्ट ने 22 मई को पश्चिम बंगाल में 2010 के बाद जारी ओबीसी सर्टिफिकेट रद्द करने का आदेश दिया है। जस्टिस तपोब्रत चक्रवर्ती और राजशेखर की बेंच ने कहा कि 2011 से प्रशासन ने किसी नियम का पालन किए बगैर ओबीसी सर्टिफिकेट जारी कर दिए। इस तरह से ओबीसी सर्टिफिकेट देना असंवैधानिक है। यह सर्टिफिकेट पिछड़ा वर्ग आयोग की कोई भी सलाह माने बगैर जारी किए गए। इसलिए इन सभी सर्टिफिकेट को कैंसिल कर दिया गया है। हालांकि यह आदेश उन लोगों पर लागू नहीं होगा, जिन्हें पहले नौकरी मिल चुकी या मिलने वाली है। कोर्ट ने निर्देश दिया कि पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम 1993 के आधार पर ओबीसी की नई सूची पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग तैयार करेगी। ममता बनर्जी सरकार से पहले वामपंथी शासन काल में भी हिन्दू संतों को माकपा की सरकार ने निशाना बनाया था। तब परिणाम यह हुआ था कि कोलकाता में सरेआम 16 भिक्षु और 1 साध्वी हत्या की गई थी। आज उस नरसंहार को 'बिजोन सेतु नरसंहार' कहा जाता है। राजनीतिक बेशर्मी देखिए कि सरेआम संतों की हत्याएं की गई लेकिन आज तक उस नरसंहार में किसी की गिरफ्तारी नहीं हो सकी है। माकपा सरकार पर आरोप हैं कि उसने इस मामले से संबंधित तथ्यों को छिपाया। नरसंहार की जाँच के लिए बने आयोगों को न तो माकपा सरकार ने सहयोग दिया और न ही तृणमूल कांग्रेस ने। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के बयान के बाद से भय का वातावरण बन गया है। आश्रमों एवं संतों को नुकसान पहुँचाने की आशंका गहरा गई है। मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के सांप्रदायिक बयान की जितनी निंदा की जाए कम है। यह तो निश्चित है कि वर्तमान कांग्रेस, पूर्व में आजादी से अब तक की कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस ने मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति ही की है। इस सोच के कारण कांग्रेस एवं अन्य इंडिया गठबंधन के दलों ने राम मंदिर उद्घाटन से भी दूरी बनाये रखी। इंडिया गठबंधन, कांग्रेस एवं तृणमूल कांग्रेस की हिंदू विरोधी छवि का नुकसान इन दलों को निश्चित रूप से मिलेगा। क्या वास्तव में ये दल अपनी बिगड़ती छवि एवं नुकसान से परेशान है? या इस बात से कि उसकी छवि बिगाड़कर 'हिंदू विरोधी' बताने की कोशिश की जा रही हैं? इससे भी बड़ा सवाल यह है कि वे अपनी बदहाली के कारणों को समझना भी चाहते है या नहीं?

गजेन्द्र सिंह शेखावत के प्रयासों के बावजूद "हर घर पेयजल योजना" नहीं पहन सकी अमलीजामा ?

चमकता राजस्थान

जयपुर। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री और राजस्थान की जोधपुर लोकसभा सीट से बीजेपी के उम्मीदवार गजेंद्र सिंह शेखावत ये दावा करते रहे हैं कि वर्तमान सरकार ने अंतिम व्यक्ति को ध्यान में रखते हुए पानी को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। ''हमारी सरकार ने पेयजल को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है।
लेकिन शेखावत के लाख प्रयास करने के बावजूद केंद्र सरकार की ''हर घर पेयजल योजना '' अमलीजामा नहीं पहन सकी ,परिणामस्वरूप इसका खामियाजा राजस्थान की निरीह जनता भुगत रही है ,लोक सभा चुनाव 2024 बाद केंद्रीय जल सकती मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत ने भी अब तक राजस्थान का रुख़ नहीं किया है!

चुनावों में हर घर में पेयजल की उपलब्धता के बारे में बात करते हुए शेखावत ने कहा था कि जल जीवन मिशन के तहत प्रतिदिन लगभग एक लाख परिवारों को पेयजल सुविधा से जोड़ा जा रहा है ।
उन्होंने दावा किया था कि ''जल जीवन मिशन के तहत काम तेजी से आगे बढ़ रहा है। हमने केवल एक वर्ष में दो करोड़ से अधिक परिवारों को पानी उपलब्ध कराया है। लेकिन धरातल पर कहीं नज़र नहीं आ रहा है जनता आज भी पानी के लिए त्राहि -त्राहि कर रही है!

जल पाताल में, पारा आसमान में

» राजस्थान प्रदेश में गर्मी का सितम चरम पर है जनता के हलक और पानी के स्त्रोत सूखते जा रहे हैं। सरकार बनने के बाद लोक सभा चुनावों के मद्देनज़र राजस्थान सरकार भी चुनावों में व्यस्त थी अब जब जनता पानी के लिए प्रदर्शन कर रही है तो सरकार की नींद खुली है और उसने कई प्लान बनाए हैं लेकिन लगता है कि अब उन्हें मॉनसून में ही पानी नसीब होगा। राजस्थान में पारा अपने चरम पर है और पानी पाताल में पहुँच चुका है समर कंटीजेंसी प्लान में जनता तक पानी पहुँचाने पर जलदाय विभाग के अधिकारियों की लापरवाही पर मुख्य सचिव सुधांश पंत भी नाराज़गी जता चुके हैं विभाग के सचिव समित शर्मा ने कंटीजेंसी के काम 31 मई तक पूरे करने की डेडलाइन दी है। आकस्मिक कार्यों को सरकार ने मार्च के पहले सप्ताह में मंजूरी दे दी थी लेकिन 20% काम होने में भी 75 दिन लग गए अब अगले छह दिन में 80 प्रतिशत काम पूर्ण होने की संभावना न के बराबर है।

भाजपा ने 2019 के घोषणा पत्र में 2024 तक हर घर को पेयजल देने का किया था वादा

लोकसभा चुनाव 2019 में प्रचार के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 2024 तक हर घर को पेयजल देने का वादा किया था। अपने किए वादे को पूरा करते हुए प्रधान मंत्री मोदी ने पोर्टफोलियो आवंटन के दौरान जल शक्ति नाम के नए मंत्रालय को शुरू किया तथा इसे रजल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालयर और रपेयजल और स्वच्छता मंत्रालयर को मिलाकर बनाया गया, इसकी जिम्मेदारी जोधपुर से सांसद गजेंद्र सिंह शेखावत को दी गई है। जिम्मेदारी लेने के बाद शेखावत ने कहा था कि इस मंत्रालय के तहत जल संबंधी सभी कार्यों को किया जाएगा। गजेन्द्र सिंह शेखावत को इस मंत्रालय का मंत्री बनने से राजस्थान में बहुत आशाएँ जगी थी राजस्थान के सुदूर रेगिस्तानी इलाकों में जल की समस्या से ग्रस्त निवासियों ने यह सोचा था कि अब तो हमारे घर में पानी की समस्या ख़त्म हो जाएगी लेकिन आज भी समस्या जस की तस बनी हुई है जबकि जल संसाधन मंत्री गजेन्द्र सिंह शेखावत दो बार सांसद रह चुके हैं फिर भी पानी की समस्या ख़त्म होने का नाम नहीं ले रही है वे इसका ज़िम्मेदार राज्य सरकार को बताते हुए अपनी ज़िम्मेदारी से पल्ला झाड़ते रहे हैं। जल शक्ति मंत्रालय के दायरे में अंतरराष्ट्रीय और अंतर-राज्य जल विवाद, नमामि गंगे परियोजना, गंगा और इसकी सहायक नदियों और उप-सहायक नदियों को साफ करने और स्वच्छ जल उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी थीं। नीति आयोग की रिपोर्ट के मुताबिक लगभग 600 मिलियन (60 करोड़) भारतीय पानी की समस्या से परेशान हैं। 75% घरों में पीने का पानी नहीं है। हर साल 2 लाख लोगों की मौत साफ पानी नहीं मिलने की वजह से हो जाती है। रिपोर्ट के मुताबिक देश का 70% पानी दूषित है। यह देश के लिए खतरे की घंटी है। इसमें भी सबसे ज्यादा खतरा दिल्ली, बेंगलुरु, चेन्नई और हैदराबाद सहित 21 शहरों में है, जहां 2026 तक पानी की बड़ी दिक्कत पैदा होने वाली है। इससे 100 मिलियन (10 करोड़) लोग प्रभावित होंगे। 2030 तक देश में पानी की मांग दोगुने होने की संभावना है।

संक्षिप्त समाचार

कोटड़ी लुहारवास के झोपड़िया आश्रम में निकली ऐतिहासिक कलश यात्रा

- जयरामदास आश्रम में ब्रह्मलीन संत रामकुमार दास महाराज की मूर्ति स्थापना एवं चरण पादुका कार्यक्रम संपन्न
- भंडारे में उमड़ा जनसैलाब, रात्रि में खूब जमी भजन संध्या
- काशीमय बना जयरामदास आश्रम महंत लक्ष्मण दास के सानिध्य में आयोजित हुआ भव्य आयोजन

चमकता राजस्थान। उदयपुरवाटी '(सुमेर सिंह राव) सीकर जिले के खंडेला तहसील क्षेत्र के कोटड़ी लुहारवास के झोपड़िया आश्रम में महंत लक्ष्मण दास महाराज के सानिध्य में भव्य कलश यात्रा निकाली गई। कोटडी के गोपीनाथ जी मंदिर से झोपड़िया आश्रम तक निकाली गई कलश यात्रा में तकरीबन 2000 से अधिक महिला पुरुष शामिल हुए। इस ऐतिहासिक कलश यात्रा का जेसीबी मशीनों से पुष्प वर्षा कर जगह-जगह स्वागत किया गया। कलश यात्रा के साथ में रामकुमार दास महाराज की मूर्ति को पालकी में बैठाकर नगर भ्रमण करवाया गया। जगह-जगह महाराज के अनुयायियों के द्वारा श्रद्धालुओं के लिए शीतल पेयजल तथा जूस की व्यवस्था की गई। तत्पश्चात बाबा रामकुमार दास महाराज की मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा एवं चरण पादुकाओं की स्थापना की गई। कोटड़ी आश्रम परिसर राम नाम के जयकारों से गूंज उठा महाआरती के पश्चात भगवान को प्रसाद का भोग लगाकर उपस्थित श्रद्धालुओं को भंडारे का प्रसाद वितरण किया गया। इससे पूर्व रात्रि में सत्संग का आयोजन किया गया जिसमें कोटपूतली के गायक कलाकार और पार्टी द्वारा भजनों की रंगारंग प्रस्तुतियां दी गई। डांसर कलाकार ने कार्यक्रम में समा बांधा। इस दौरान एक दिवसीय मेले का आयोजन भी किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान के कोने-कोने से 13 मंडलों के संत महंतो ने भाग लिया। कार्यक्रम के समापन पर कोटड़ी जयरामदास आश्रम के महंत लक्ष्मण दास महाराज द्वारा संत महात्माओं का विदाई समारोह कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में खंडेला विधायक सुभाष मील, जयपुर के हवामहल विधायक बालमुकुंदाचार्य, रैवासा धाम के महंत राघवाचार्य, छैल छबीले शरणाचार्य छारसा धाम, रामविलास दास त्रिवेणी धाम, हरीदास हरण्या, भीवांदास, जनार्दन दास नारायणपुर, रामनरेश दास बांरा, बलेश्वर दास कोटपूतली, बजरंगदास डोकण, मुरलीधर सि-रोही, सियाराम दास भूदोली, रामदास गांवली, लखन दास घाघड़ाली, गंगादास छावनी, एडवोकेट सरफराज खान दायरा,आदिवासी मीणा सेवा संघ के प्रदेश प्रधान सुरेश मीणा किशोरपुरा, किशोरपुरा सरपंच मोहनलाल सैनी, गोपाल सिंह शेखावत पोंख, जगदीश प्रसाद महरानियां सहित काफी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

बिहार : लोकसभा चुनाव में 200 जनसभाएं करने के उपलक्ष्य में तेजस्वी

पटना/एजेंसी। बिहार में लोकसभा चुनाव के छठे चरण में 25 मई को होने वाले मतदान के लिए प्रचार गुरुवार शाम थम जाएगा। इस बीच, राजद के नेता तेजस्वी यादव और वीआईपी के प्रमुख मुकेश सहनी ने 200 जनसभाएं पूरी कर लेने के उपलक्ष्य में केक काटा। इसका एक वीडियो भी अब वायरल हो रहा है जिसमें दोनों नेता 200 रैलियां करने के मौके पर केक काटते नजर आ रहे हैं। वीडियो में वीआईपी के नेता मुकेश सहनी राजद के नेता तेजस्वी यादव को सरप्राइज देने की बात करते नजर आ रहे हैं। हेलीकॉप्टर में केक काटने का यह वीडियो गुरुवार को तेजस्वी यादव ने अपने एक्स हैंडल से शेयर किया है। वीडियो में तेजस्वी कहते हैं, मैंने ध्यान नहीं दिया था कि हम लोग 200 सभा कर चुके हैं। मेरे दिमाग में था कि 190 के आसपास हुआ है। विधानसभा में तो इससे भी ज्यादा लगभग 250 के आसपास हमने सभाएं की हैं।

बाड़मेर पुलिस की अवैध मादक पदार्थ की तस्करी के विरुद्ध बड़ी कार्रवाई

झारखंड से तस्करी कर ट्रक में लाया 491 किलो डोडा पोस्त जब्त, एक आरोपी गिरफ्तार, 2 को किया डिटेन

चमकता राजस्थान। जयपुर/ बाड़मेर!

73 लाख रुपये है कीमत, अवैध मादक पदार्थो के विरुद्ध बाड़मेर पुलिस की इस साल की सबसे बड़ी कार्रवाई

(खलील कुरैशी) 23 मई। बाड़मेर जिला स्पेशल टीम की अवैध मादक पदार्थ की तस्करी की सूचना पर पांच थानों की पुलिस ने लगातार पीछा कर एक ट्रक को रुकवा 24 कट्टों में भरा 4 क्विंटल 91 किलो अवैध डोडा पोस्त जब्त किया है, जिसकी कीमत करीब 73 लाख है। यह डोडा पोस्त चावल की भूसी के कट्टों के नीचे छुपा कर झारखंड से तस्करी कर लाया जा रहा था।एसपी नरेंद्र सिंह मीणा ने बताया कि मामले में पुलिस ने आरोपी लक्ष्मण मेघवाल पुत्र पेमाराम निवासी खडीन थाना रामसर को गिरफ्तार कर रतासर थाना चौहटन निवासी हनुमान राम जाट पुत्र धर्माराम एवं सनावड़ा निवासी धर्माराम जाट पुत्र दीपाराम को डिटेन किया है। एसपी मीना ने बताया कि मादक पदार्थ तस्करी गैंग पर निगरानी के दौरान डीएसटी को सूचना मिली कि सनावड़ा से भोमसर की तरफ जा रहे एक ट्रक में डोडा पोस्त की तस्करी की जा रही है। इस पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक नाजिम अली के सुपरविजन में डीएसटी, थाना सदर, कोतवाली, रीको, चौहटन व ग्रामीण पुलिस की टीमों द्वारा ट्रक का पीछा कर भोमासर गांव के पास रुकवाया गया।तलाशी में ट्रक में चावल की भूसी के कट्टों के नीचे छुपा कर रखें 24 कट्टों से कुल 491 किलो अवैध डोडा पोस्त जब्त कर आरोपी लक्ष्मण मेघवाल को गिरफ्तार किया गया। इससे पूछताछ की गई तो तीन अन्य लोगों द्वारा ट्रक के आगे एस्कॉर्ट करते हुए झारखंड से डोडा पोस्त लाना बताया। पुलिस द्वारा अब तक दो लोगों हनुमाना राम व धर्मा राम को दस्तयाब किया जाकर पूछताछ की जा रही है।

विलक्षण एवं असाधारण प्रतिभा की धनी प्राची सोनी की आगामी पढ़ाई का सारा खर्च उठाएगी राजस्थान सरकार : शिक्षा मंत्री दिलावर

चमकता राजस्थान

जयपुर अलवर (खलील कुरैशी)। शिक्षा मंत्री मदन दिलावर ने घोषणा की है कि राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की बारहवीं की परीक्षा मे 500 मे से 500 अंक प्राप्त कर राजस्थान प्रदेश मे इतिहास रचने वाली इकरोटिया गांव, खेरतल, अलवर की एक्सिस एकेडमी स्कूल की छात्रा प्राची सोनी की भविष्य की शिक्षा का सारा खर्च राजस्थान सरकार वहन करेगी और उसके कैरियर बनाने में मदद करेगी।
शिक्षा मंत्री दिलावर यहां खैरथल मैं आयोजित बालिका के सम्मान समारोह मे मुख्य अथिति पद से संबोधित कर रहे थे। मंत्री ने कहा कि प्राची सोनी हम सब के लिए प्रेरणा है। इस बात की कि यदि ठान लिया जाए तो कुछ भी असंभव नहीं होता। प्राची ने वो कारनामा कर दिखाया जो राजस्थान मे आज तक पहले कभी नही हुआ और मेरे लिए तो ये सुखद संयोग है की यह उपलब्धि तब हुई जब मै राजस्थान

का शिक्षा मंत्री हूं। शिक्षा मंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री भजन लाल की सरकार लगातार प्रदेश में शिक्षा के स्तर को बेहतर से बेहतर बनाने का प्रयास कर रही है। जिस के परिणाम भी सुखद आने लगे है। मंत्री ने प्राची की उपलब्धि के लिए उसके शिक्षको को भी बधाई देते हुए कहा की आप का योगदान भी महत्वपूर्ण है। मंत्री ने घोषणा की कि यहां के बिबिरानी सरकारी विद्यालय मे खेलकूद की सुविधाओं का विकास किया जायेगा, अध्यापकों की कमी को भी पूरा किया जायेगा। साथ ही विद्यालय के बच्चो के लिए शैक्षिक भ्रमण की भी व्यवस्था की जाएगी। विद्यालय मे 90 प्रतिशत से अधिक अंक प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों का सम्मान किया जायेगा। दिलावर ने विद्यालय के खेल मैदान की चारदीवारी निर्माण के लिए कार्यक्रम मे उपस्थित जिला प्रमुख बलबीर छीलर को निर्देश दिए। कार्यक्रम मे राजस्थान सरकार के वन मंत्री संजय शर्मा, पूर्व विधायक रामहेत यादव, भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक गुप्ता तथा जिला प्रमुख बलबीर छिल्लर उपस्थित थे। कार्यक्रम में 90 प्रतिशत या उस से अधिक अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थीयो का सम्मान भी मंत्री द्वारा किया गया। शिक्षा मंत्री का हुआ भव्य स्वागत कार्यक्रम से पूर्व खैरथल पहुंचने पर शिक्षा मंत्री ? दिलावर का ग्रामवासियों ने जोरदार स्वागत किया। शिक्षा मंत्री दिलावर एवं होनहार छात्रा प्राची को जुलूस के रूप में मुख्य मार्ग से फूलो से से सजे वाहन पर बिठाकर पुष्पवर्श करते हुए कार्यक्रम स्थल पर लाया गया।

सोलापुर डैम में नाव पलटने की घटना में पांच शव बरामद, एक किशोर अब भी लापता

सोलापुर/एजेंसी। राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एडीआरएफ) ने यहां उजनी डैम में नौका डूबने की घटना में लापता छह में से पांच लोगों के शव निकाल लिए हैं। एक अधिकारी ने गुरुवार को बताया कि एक ही परिवार से चार सदस्यों और एक नाविक का शव बरामद किया गया है।
एनडीआरएफ और पुलिस बचाव दल ने जाधव परिवार और नाविक अनुराग अवघड़े के शव डैम से बाहर निकाले हैं।
इंदापुर थाने के इंस्पेक्टर सूर्यकांत कोकणे ने आईएएनएस को बताया, बुधवार को दिन भर चले ऑपरेशन के बाद हमने पांच पीड़ितों के शव बरामद किये हैं। एक किशोर गौरव डोंगरे अब भी लापता है। हमने उसकी तलाश के लिए नये सिरे से ऑपरेशन शुरू किया है।
उन्होंने बताया हादसे की शिकार नाव भी निकाल लिया गया है। इसके अलावा एक मोटरसाइकिल भी डैम से मिली है जो हादसे में एकमात्र जीवित बचे व्यक्ति राहुल डोंगरे की बताई जा रही है। वह कल देर रात तैरकर सुरक्षित स्थान पर चला गया था।
यह दुर्घटना मंगलवार देर रात हुई थी। डैम के बैकवाटर में सोलापुर के कुगांव और पुणे के कलाशी के बीच नियमित रूप से यात्रियों को ले जाने वाला मोटर बोट अचानक आये तूफान के कारण पलट गई थी। सोलापुर पुलिस ने बताया कि नाव में सात लोग सवार थे। वे कुगांव से कलाशी जा रहे थे। बीच रास्ते में अचानक मौसम बदल गया। तूफान के कारण डैम के पानी में लहरें उठने लगीं और नाव पलट गई।
जिन लोगों के शव बरामद हुए हैं उनकी पहचान गोकुल जाधव (30), उनकी पत्नी कोमल (25) और दो बच्चे झ्र तीन साल की माही तथा एक साल के शुभम के रूप में हुई है। नाविक अनुराग अवघड़े की उम्र 35 साल थी।
दुर्घटना में सुरक्षित बचे डोंगरे ने कलासी गांव पहुंचकर लोगों को हादसे के बारे में बताया। इसके बाद पुणे पुलिस और जिला प्रशासन को जानकारी दी गई।
बुधवार को एनडीआरएफ ने पेशेवर तैराकों के साथ तलाशी अभियान शुरू किया था।

हीटवेव पर सरकार पूर्णतया सतर्क

अतिरिक्त मुख्य सचिव ने किया औचक निरीक्षण ना पंखा ना कूलर, टॉयलेट की बदबू से परेशान मरीज

➲ हीटवेव से मरीजों की संख्या में हिजाफा लेकिन एसएमएस में डेडिकेटेट वार्ड तक तैयार नहीं

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। प्रदेश के सवाई मानसिंह चिकित्सालय में गुरुवार को चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह सहित चिकित्सा शिक्षा आयुक्त इकबाल खान ने अस्पताल परिसर का दौरा किया। इमरजेंसी, मेडिसिन वार्ड, बांगड़ परिसर एवं चरक भवन का दौरा करचिकित्सा व्यवस्थाओं का निरीक्षण किया। अस्पताल परिसर के गलियारों में पेशाब की बदबू से परेशान मरीज, पुरानी इमरजेंसी में डक्टिंग प्लांट बंद होने एवं अन्य स्थानों पर कूलर, पंखे, एसी चालू नहीं होने के दौरान अस्पताल प्रशासन को फटकार लगा नाराजगी जाहिर की। उन्होंने सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. दीपक माहेश्वरी एवं परिसर में वैगियों एवं परिजनों के लिए,अधीक्षक डॉ. सुशील भाटी को निर्देश दिए कि अस्पताल में अतिआवश्यक प्रकृति की सेवाओं के लिए तत्काल प्रभाव से कंटीजेंसी प्लान बनाएं एवं दो दिन के भीत्तर कूलर, पंखे, एसी, वाटर कूलर आदि को ठीक करवाएं। साथ ही अन्य व्यवस्थाओं को सात दिन में सुचारू करें। हीटवेव को लेकर डेडिकेडेड बेड के निर्देश, लेकिन अब तक एसएमएस में नहीं बना वार्ड अतित्तिरक्त मुख्य सचिव ने अस्पताल, पेयजल तथा बैठने की समुचित व्यवस्था करने के निर्देश तो दिए। लेकिन राज्य सरकार के आदेशों की अवेलना अस्पताल में जमकर हो रही है। हीटवेव के मरीजों में लगातार इजाफा हो रहा है हीटवेव से पीड़ित मरीजों को राहत देने के लिए राज्य सरकार लू-तापघात के मरीजों के लिए बैंड आरक्षित रखने, आवशयक दवा एवं जांच सुविधाओं एवं पर्याप्त मात्रा में आईस पैक, आईस क्यूच आदि की उपलब्धता रखने के निर्देश दिए गए थे। लेकिन आदेशों की धज्जियां उड़ती देख अस्पताल प्रशासन पर नाराजगी जाहिर की ऐसे में मरीज हित को लेकर लगातार चिकित्सा विभाग की मौसमी चीमारियों पर बैठक हो रही है, लेकिन अस्पताल में डेडिकेटेट वार्ड के नहीं बनने से हीटवेव से पीड़ित मरीजों को अस्पताल में राहत नहीं मिल पा रही है। व्यवस्थाओं में सुधार के लिए नोडल अधिकारी, अतिरिक मुख्य सचिव ने चिकित्सा शिक्षा आयुक्त इकबाल खान को सवाई मानसिंह मेडिकल कॉलेज सेहीटवेव प्रबंधन एवं भौसमी बीमारियों को लेकर शुक्रवार को बैठक अतिरिक्त मुख्य सचिव की अध्यक्षता में शुक्रवार को हीटवेव प्रबंधन को लेकर उच्च स्तरीय बैठके आयोजित की जाएगी। इसमें मौसमी बीमारियों, गर्मी जनित बीमारियों, अस्पतालों में पानी, बिजली की व्यवस्था, क लर-एसी, पंखों आदि की क्रियाशीलता सहित अन्य बिंदुओं पर विस्तृत समीक्षा की जाएगी। वीसी के माध्यम से आयोजित इस बैठक में मेडिकल कॉलेजों के प्रधानाचार्य अधीक्षक, संयुक्त निर्देशक जोन, सीएमएचओ, पीएमओ, जिला शिशु स्वास्थ्य एवं प्रजनन अधिकारी, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जिला कार्यक्रम प्रबंधक, समस्त खण्ड मुख्य चिकित्सा अधिकारी एवं खण्ड कार्यक्रम प्रबंधक शामिल होंगे। संबद्ध एसएमएस अस्पताल सहित सभी अस्पतालों में चिकित्सा व्यवस्थाओं में सुधार के लिए नोडल अधिकारी नियुक्त करने के निर्देश दिए हैं। साथ ही, नोडल अधिकारी के माध्यम से 28 मई, 2024 तक विस्तृत रिपोर्ट प्रस्तुत करने के निर्देश भी दिए।

गहलोत सरकार के कामों की जांच करवा रहे गलत किया है तो सजा भी होनी चाहिए : सीएम

चमकता राजस्थान

जयपुर। राजस्थान में धर्म के आधार पर किसी को भी आरक्षण नहीं मिलने वाला हैं। जो संविधान में निर्मित है, उसी आधार पर आरक्षण मिल रहा है। उसी आधार पर मिलेगा, धर्म के आधार पर कोई आरक्षण नहीं मिलेगा। यह बात सीएम भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को लखनऊ में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस में कही। सीएम भजनलाल शर्मा आज एक दिवसीय दिल्ली और उत्तर प्रदेश के दौरे पर रहे। सीएम भजनलाल ने कहा, मुसलमानों को धर्म आधारित आरक्षण देना संविधान की मूल भावना के खिलाफ है। उन्होंने कहा कि इडी गठबंधन वाले दलित, ओबीसी और आदिवासियों का हक छीनकर मुसलमानों को देना चाहते हैं, लेकिन बीजेपी ऐसा कभी नहीं होने देगी। देश संविधान से चलता है, तुष्टीकरण से नहीं। गलत काम किया है तो जांच भी होनी चाहिए-सीएम भजनलाल शर्मा ने एक सवाल के जवाब में कहा कि हां, राजस्थान में पिछली सरकार के कामों की जांच हो रही है, होनी भी चाहिए। अगर किसी ने गलत काम किया है तो उसकी जांच भी होनी चाहिए। गौरतलब है कि राजस्थान में सीएम भजनलाल शर्मा ने अपनी कैबिनेट की पहली बैठक में पिछली गहलोत सरकार के अंतिम 6 माह के कार्यकाल में लिए गए फैसलों की जांच के लिए मंत्रिमंडलीय कमेटी का गठन किया था। यह कमेटी गहलोत सरकार के अंतिम समय में लिए गए सभी फैसलों का रिव्यू कर रही है। आचार संहिता लगने से पहले कमेटी की करीब तीन बैठकें हो चुकी हैं। कमेटी की रिपोर्ट के बाद सरकार गहलोत सरकार के कुछ फैसले पलट भी सकती है। सीएम भजनलाल शर्मा ने कहा कि दिल्ली के सीएम अरविंद केजरीवाल के मुख्यमंत्री कार्यालय में अपनी ही पार्टी की वरिष्ठ नेता के साथ बदतमीजी की गई, तो ये लोग दिल्ली की माताओं- बहनों को सुरक्षा कैसे देंगे।

संक्षिप्त खबर

आतंकी हमले में घायल फरहा ने एसएमएस अस्पताल में कराई ड्रेसिंग

चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)। जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग में आर्तकियों की फायरिंग में घायल जयपुर के दंपती को जम्मू स्थित मेडिकल कॉलेज में इलाज के बाद शिफ्ट किया गया है। पति तबरेज खान को आंख के इलाज के लिए चेन्नई के अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जबकि पत्नी फरहा खान को जयपुर के सवाई मानसिंह अस्पताल के ट्रॉमा सेंटर लाया गया है। यहां एक्स-रे के साथ ही उनके कंधे का सिटी स्कैन करवाया गया है। मुख्यमंत्री के आदेशानुसार फरहा खान का एसएमएस हॉस्पिटल में चेकअप किया गया है। उन्हें सबसे अच्छी चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने के निर्देश हैं। उनके बुलेट (गोली) के घाव का परीक्षण किया गया। फिलहाल फरहा की तबीयत स्थिर है। उनका एक्स-रे और सिटी स्कैन करवाया गया है, ताकि उनके कंधे की स्थिति को देखा जा सके। दाहिने तरफ गोली लगने से फरहा के कंधे में चोट आई थी। उनकी हड्डी भी क्रेक हो गई थी। जम्मू के आर्मी हॉस्पिटल में ऑपरेशन कर कंधे के पास प्लेट डाली गई थी।

ड्रेसिंग एवं प्राथमिक उपचार के बाद घर ले गए परिजन

एक्स-रे और सिटी स्कैन में सभी चीजें नॉर्मल आने के बाद उनके कंधे की ड्रेसिंग करके दोबारा प्लास्टर लगाया गया है। मरीज को ऑब्जर्वेशन के लिए भर्ती रहने के लिए कहा, लेकिन बच्चे छोटे होने के कारण परिजनों ने मना कर दिया। परिजन स्वेच्छा से उन्हें घर ले गए हैं। उनको उनके घर पर ही चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाई जाएगी। चिकित्सकों के अनुसार हमने मरीज को 10 दिन बाद फॉलोअप के लिए हॉस्पिटल आने को कहा है और जरूरी दवाइयां दे दी हैं।

करी मार्मिक अपिल, मेरे पति की आंख डोनेट की जाए

फरहा खान ने बताया कि हम 18 तारीख को घूमने गए थे। घूमने के बाद रात को हम जैसे ही खाना खाने होटल पहुंचे। पूरी फैमिली धीरे-धीरे अंदर जा रही थी। मैं और मेरे पति सबसे आखिर में थे। बाइक पर आए आर्तकियों ने गोली चलाई। पहले मेरे पति को गोली लगी और फिर मुझे लगी। मेरा बेटा मेरे साथ था। उसने जैसे ही गोली चलते देखा तो डर से भागकर कुर्सी के पीछे छुप गया। मेरी बेटी अपने बड़े पापा के साथ अंदर चली गई थी। मेरी अपील है कि मेरे पति को एक आंख डोनेट की जाए।

जयपुर की छात्रा योगिता सोनी ने 96.20% अंक प्राप्त कर किया नाम रोशन

चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड कक्षा 12 के परीक्षा परिणाम में मनोहरपुर नगरपालिका क्षेत्र की बेटियों ने भी शिक्षा जगत में फहराया झंडा इस क्रम में मनोहरपुर निवासी हाल निवास पानों का दरीबा सुभाष चौक जयपुर में निवासी योगिता सोनी पुत्री ज्ञान प्रकाश सोनी, होनहार और प्रतिभावान छात्रा जो कि एसएस जैन बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल सांगानेरी गेट जयपुर की होनहार और प्रतिभावान छात्रा है कक्षा 12वीं कला वर्ग की परीक्षा में 96.20 % अंक प्राप्त कर जहां विद्यालय का नाम रोशन किया है वही परिवार का मान बढ़ाकर परिजनों एवं विद्यालय को खुशी का माहौल भी दिया है ' इस मौके योगीता सोनी की मां बबीता सोनी ने इस बारे में विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि मेरी लाडली बिटिया योगिता सोनी ने लक्ष्य निर्धारित कर उसकी प्राप्ति के लिए मोबाइल फोन से दूरी बनाकर रोजाना 6 से 7 घंटे पढ़ाई करी और पुर्ण एकचित्त ध्यान, मन लगाकर अपनी स्टेडी करके यह सफलता प्राप्त करी है इस अवसर प्रतिभावान छात्रा योगिता सोनी ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैं अपनी पढ़ाई का पुरा श्रेय अपने गुरुजनों एवं माता-पिता को देती हूं उनके आशिर्वाद एवं उचित मार्गदर्शन से ही मैं कक्षा 12वीं के कला वर्ग में 96.20% अंक लाने में सफल हुई हूं तथा भविष्य में वह अब आगे जाकर आईएएस या आईपीएस बनना चाहती हूं 'कहते भी हैं की पढ़ाई में बेटियां भी बेटों से पीछे नहीं है ' इस दौरान एस एस जैन बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल जयपुर की प्रींसिपल डॉ. सचदेवा और वाईस प्रीसिंपल योगिता जैन ने बताया कि पूरे विद्यालय परिवार को योगिता सोनी पर गर्व है कि उसने अपनी कड़ी मेहनत, लगन और अनुशासानात्मक तरिके पढ़ाई पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित करके 96.20 अंक लाकर एस एस जैन बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल सांगानेरी जयपुर का नाम रोशन किया है निश्चित रूप से योगिता सोनी एस एस जैन बालिका सीनियर सेकेंडरी स्कूल में अध्ययनरत छात्राओं के मार्गदर्शन का सिंबल बनेगी हमारा आशीर्वाद हमेशा योगीता सोनी के साथ और जल्द ही वह अपने निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति आवशयक रूप से करेगी।

मुख्य सचिव के निर्देश पर अधिकारी-कर्मचारियों की बन रही सूची

काम करने को किया जायेगा पारितोषित, नकारा अफसरों को जबरन भेजा जाएगा घर

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। राज्य सरकार में बैठकर भ्रष्टचार कर रहे और जनता के काम से जी चुरा अफसरों पर सरकारी डंडा चलने की तैयारी में है। ऐसे अधिकारी और कर्मचारियों को जबरन घर भेजने की तैयारी की जा रही है। मुख्य सचिव के निर्देश पर ऐसे लोगों की सूची बनाई जा रही है।सरकारी विभागों में अब भ्रष्ट और काम नहीं करने वाले अफसर, कर्मचारियों को जबरन रिटायर किया जाएगा। भ्रष्टाचार के गंभीर मामलों में लगातार शिकायतों और नॉन परफॉर्मर बने रहने वाले अफसर-कर्मचारियों की विभागवार लिस्ट बनाने का काम शुरू हो चुका है। 15 साल की नौकरी पूरी कर चुके अफसर-कर्मचारी इसके दायरे में आएंगे। दरअसल, मुख्य सचिव सुधांश पंत ने सभी विभागों को भ्रष्ट और नॉन परफॉर्मर अफसर, कर्मचारियों की विभागवार लिस्ट तैयार करने के आदेश दिए हैं। ऐसे अफसर-कर्मचारियों को जबरन रिटायर करने के प्रस्ताव तैयार करने को कहा है। मुख्य सचिव के आदेशों के बाद सभी विभागों में काम शुरू हो चुका है। करप्शन के मामले में टॉप रहने वाले विभागों में सबसे ज्यादा अफसर और कर्मचारी छंटनी के दायरे में आएंगे। सूत्रों के अनुसार राजस्थान सिविल सेवा (पेंशन) नियम 1996 के नियम 53 (1) के तहत अनिवार्य रिटायरमेंट के प्रावधान पहले से है। इन नियमों के तहत सरकार ऐसे किसी 3 महीने का नोटिस या तीन महीने की एडवांस सैलरी देकर जबरन रिटायर कर सकती है सरकार भ्रष्ट और काम नहीं करने वाले अफसर-कर्मचारियों को जबरन रिटायर करने के लिए तय नियमों के हिसाब से प्रोसेस पूरा किया जाता है। नियमों के अनुसार जिन अफसर और कर्मचारियों की 15 साल की सरकारी नौकरी पूरी हो चुकी हो, उन्हें आचरण और खराब काम को आधार बनाकर जबरन रिटायर किया जा सकता है। इस नियम के तहत जबरन रिटायर करने वाले कर्मचारी-अफसरों की विभागवार स्क्रीनिंग होती है। इनकी सालाना गोपनीय रिपोर्ट (एसीआर) खराब होती है। उन्हें छांटा जाता है। नियमों के अनुसार जबरन रिटायरमेंट के दायरे में आने वाले अफसर-कर्मचारियों को तीन महीने का नोटिस दिया जाता है। नोटिस पीरियड की जगह तीन महीने की एडवांस सैलरी और भत्ते देकर तुरंत रिटायर किया जा सकता है।अफसर या कर्मचारी को जबरन रिटायर कर सकती है, जिन अफसर और कर्मचारियों के खिलाफ लगातार भ्रष्टाचार के मामले आते हों।सरकार के कामकाज में लगातार लापरवाह हो। जो सरकारी सेवा में विभाग पर बोझ बन चुके हों। उन्हें जबरन रिटायर किया जा सकता है।

खाद्य सुरक्षा विभाग ने मिलावटखोरों पर कसा शिंकजा

सूरजपोल अनाजमंडी में किया 2470 लीटर सरसों तेल सीज

चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)। मिलावट को रोकने हेतु शुरू किए गए विशेष अभियान के अंतर्गत अतिरिक्त मुख्य सचिव शुभ्रा सिंह के और आयुक्त खाद्य सुरक्षा इकबाल खान के निर्देशन में संयुक्त आयुक्त, खाद्य सुरक्षा डॉ. एसएन धौलपुरिया एव रवि शेखावत सीएमएचओ जयपुर के नेतृत्व में गुरूवार को सूरजपोल अनाज मंडी परिसर स्थित मैसर्स ताम्बी ट्रेडिंग कंपनी के गोदाम पर छापा मारा गया। इस दौरान खाद्य सुरक्षा अधिकारियों के केंद्रीय दल ने मैसर्स ताम्बी ट्रेडिंग कंपनी के परिसर से टैगोर मार्का सरसों तेल के नमूने लिए। प्रथम दृष्टया तेल में मिलावट की संभावना को देखते हुए 2470 लीटर सरसों तेल सीज किया गया। उत्तरोत्तर कार्यवाही खबर लिखे जाने तक जारी थी।

विभिन्न ब्रांड के 2044 किलो एवं नन्द कृष्णा ब्रांड का 4000 लीटर मिलावटी घी को किया सीज

चमकता राजस्थान, जयपुर (खलील कुरैशी)। मुख्यमंत्री के निर्देश पर चलाए जा रहे चिकित्सा विभाग के अभियान शुद्ध आहार-मिलावट पर वार' के तहत खाद्य सुरक्षा आयुक्त इकबाल खान के निर्देशन और पंकज ओझा अति आयुक्त के नेतृत्व में पर ताबड़तोड़ कार्यवाहियां की जा रही है विभाग की टीम ने गुरुवार को भीकार्रवाई करते हुए करते हुए मिलावटी घी और सरसों का तेलजब्त किया है। जानकारी केअनुसार गुरुवार को विभाग कीटीम ने कार्रवाई करते हुएकुकरखेड़ा मंडी सीकर रोड पर रितेश इंटरप्राइजेज पर पालीवाल,बालाजी और तिरुमला ब्रांड का2044 किलो घी और फूड ट्रेडिंगपर होम सारथी का नन्द कृष्णाब्रांड का लगभग 4000 लीटर घी सीज किया है।

भाजपा की जनविरोधी नीतियों का चुनाव में जनता करेगी पक्का ईलाज : जूली

चमकता राजस्थान, अलवर/पंजाब। कांग्रेस पार्टी के स्टार प्रचारक, नेता प्रतिपक्ष और पंजाब के गुरदासपुर के पर्यवेक्षक टीकाराम जूली ने गुरदासपुर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी सुखजिंदर सिंह रंधावा के समर्थन में पठानकोट, हल्कोभोआ विधानसभा क्षेत्र के गतोरा तथा सुजानपुर विधानसभा क्षेत्र के भनवाल में आयोजित जनसभा को संबोधित किया। जूली बोले पांच चरण के चुनाव केंद्र की मोदी सरकार की असफलता की कहानी बयां कर रहे हैं। देश का आवाम जुगल जोड़ी को पटकनी देने की तैयारी में पूरे जोश से लबरेज है।जूली बोले पिछले 10 वर्षों का हिसाब इस बार जनता इन्हें बेनकाब करके करेगी। दिल्ली दरबार के विरुद्ध लहर से भाजपाइयों के माथे पर चिंता की लकीरें खिंच गई है।जूली ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशियों का स्वागत करने के स्थान पर जनता काले झंडे दिखा रही है। उन्होंने कहा कि भारतीय जनता पार्टी की जनविरोध नीतियों का देश की जनता इस बार इस लोकसभा चुनाव में पोस्टमार्टम करेगी। उन्होंने कहा कि भाजपा के दिग्गज प्रत्याशियों के चेहरे पर शिकन आ गई है। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र के लिए खतरे की घंटी बनी केंद्र की मोदी सरकार का अबकी बार 400 पार का अहंकार देश की जनता चूर करेगी।

जयपुर विकास प्राधिकरण ने अवैध कॉलोनियों द्वारिकापुरी, सद्भावना नगर पर चलाया पीला पंजा

चमकता राजस्थान

जयपुर (खलील कुरैशी)। जयपुर विकास प्राधिकरण द्वारा जोन-10 में ईकोलोजिकल जोन में निजी खातेदारी की करीब 18 बीघा कृषि भूमि पर 02 नवीन अवैध कॉलोनियों को पूर्णतः ध्वस्त किया गया। जोन-8 में यातायात कन्ट्रोल पुलिस के साथ सामूहिक अभियान के तहत सांगानेर सर्किल से चोरड़िया पेट्रोल पम्प, मालपुरा गेट, सवाई माधोपुर टुटी पुलिया तक करीब 05 किमी. तक रोड़ सीमाओं को कब्जा-अतिक्रमण मुक्त करवाया गया। मुख्य नियंत्रक प्रवर्तन महेन्द्र कुमार शर्मा ने बताया कि जोन-10 के क्षेत्राधिकार ईकोलोजिकल जोन में अवस्थित आगरा रोड़, ग्राम लुनियावास, बाबा बालकनाथ आश्रम के पीछे, जिला जयपुर में करीब 12 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर ''द्वारकापुरी'' के नाम सें विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गई मिट्टी-ग्रैवल सड़कें, बाउण्ड्रीवाल व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। संबंधित से जेडीए के ध्वस्तीकरण की कार्यवाही का नियमानुसार खर्चा-वसूली की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। जेडीए द्वारा जोन-10 के क्षेत्राधिकार ईकोलोजिकल जोन में अवस्थित आगरा रोड़, ग्राम लुनियावास जिला जयपुर में ही करीब 06 बीघा निजी खातेदारी कृषि भूमि पर जेडीए की बिना स्वीकृति-अनुमोदन के एवं बिना भू रूपान्तरण करवायें भूमि को समतल कर ''सद्भावना नगर'' के नाम सें विगत दिवसों में मौका पाकर रातों-रात बनाई गई मिट्टी-ग्रैवल सड़कें, बाउण्ड्रीवाल व अन्य अवैध निर्माण कर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने की सूचना प्राप्त होते ही प्रारंभिक स्तर पर ही आज जोन-10 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मशीन व मजदूरों की सहायता से ध्वस्त किया जाकर नवीन अवैध कॉलोनी बसाने के प्रयास को विफल किया गया। संबंधित से जेडीए के ध्वस्तीकरण की कार्यवाही का नियमानुसार खर्चा-वसूली की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी। उक्त कार्यवाही प्रवर्तन अधिकारी जोन-10, 14, 03 तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई। इसी प्रकार यातायात कन्ट्रोल पुलिस के साथ सामूहिक अभियान के तहत जोन-08 के क्षेत्राधिकार में अवस्थित सांगानेर सर्किल से चोरड़िया पेट्रोल पम्प, मालपुरा गेट, सवाई माधोपुर टुटी पुलिया तक करीब 05 किमी. तक अवैध रूप से कब्जा-अतिक्रमण कर करीब 120 स्थानों पर लगाये गये थडी ठेले, त्रिपाल, होर्डिंग, साइन बोर्ड, टेबल कुर्सियां इत्यादि अवैध कब्जे-अतिक्रमणों को सामूहिक अभियान का आयोजन कर जोन-08 के राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा जेसीबी मषीन व मजदूरों की सहायता से हटवाया जाकर रोड सीमा को अतिक्रणमण मुक्त कराया गया। उक्त कार्यवाही यातायात कन्ट्रोल पुलिस का जाप्ता तथा प्राधिकरण में उपलब्ध जाप्ते, लेबर गार्ड एवं जोन में पदस्थापित राजस्व व तकनीकी स्टॉफ की निशादेही पर प्रवर्तन दस्ते द्वारा सम्पादित की गई।

अठारह बीघा भूमि पर दो नवीन अवैध कॉलोनियों को किया ध्वस्त

सड़क सीमा में आ रहे अतिक्रमणों को हटाया

शाहपुरा जिला कलेक्टर सभागार में आयोजित हुआ जोरदार

अमर शहीद कु प्रताप सिंह बारहठ सेवा संस्थान शाहपुरा ने शहीद कुंवर प्रताप सिंह बारहठ को दी श्रद्धांजलि

वीरों के अमर- अजर बलिदान से सुशोभित और सुसज्जित हैं राजस्थान : राजेन्द्र सिंह शेखावत

चमकता राजस्थान

जयपुर/शाहपुरा (खलील कुरैशी) महान क्रांतिकारी अमर शहीद कु प्रताप सिंह बारहठ की 132 वी जयंती एवं बैसाखी पूर्णिमा बलिदान तिथि के अवसर पर 23 मई को जिला कलक्टर कार्यालय शाहपुरा में शहीद कु प्रताप को श्रद्धांजली अर्पित की।मुख्य अतिथि जिला कलक्टर राजेंद्र सिंह शेखावतऔर अध्यक्षता अतिरिक्त जिला कलक्टर सुनील पुनिया ने की,विशिष्ठ अतिथि विशाल सिंह ,सुखदेव सिंह रजनीश वर्मा ओएसडी एलएनजे भीलवाड़ा ग्रुप रहे। गौरतलब है कि विगत कई वर्षों से ग्रुप द्वारा इस संस्थान को निरंतर सहयोग प्रदान किया जाता रहा है सर्व प्रथम अतिथियों द्वारा बारहठ शहीद के चित्रों पर दीप प्रज्वलित माल्यार्पण किया गया। कैलाश जाड़ावत ने देश वन्दना से कार्यक्रम का आगाज किया।संस्थान अध्यक्ष एवं सदस्यों ने अतिथियों का स्मृति चिह्न और उपर्णा से स्वागत किया।मुख्य वक्ता फतह सिंह लोढ़ा ने अपने वक्तव्य में बा-रहठ गोरव गाथा बताते हुए, प्रशासन ब मंचस्थ अतिथि से आग्रह किया की इस शाहपुरा जिला बना हे। तो क्रांतिकारी जोरावर सिंह बारहठ की स्मृति में भी कोई कोलनी या सरकारी भवन का नामकरण करवाने हेतु आग्रह किया । वही लादूराम व्यास के पुत्र नरेश जी व्यास ने कलक्टर साहब से स्वतंत्रता सेनानी परिवार जनों के लिए प्रशासन द्वारा परिचय कार्ड जारी करवाने का अनुरोध किया जिसे कलक्टर महोदय द्वारा लिखित पत्र मांग कर कार्यवाही करने सिफारिस की।

जिला कलक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत ने दिया ज़ोरदार उद्बोधन

» मुख्य अतिथि जिला कलक्टर राजेंद्र सिंह शेखावत ने अपने उद्बोधन में नव पीढ़ी को वीरों की बलिदानी गाथाए,बताने के लिए ऐसे आयोजनों की आवश्यकता बताई।अपने वक्तव्य में भगत सिंह और प्रताप सिंह बारहठ की युवा जवानी का वर्णन किया, आज का युवा अपने कैरियर की चिंता में हे, जबकि आजादी के दीवानों की लगन और एक ही धुन राष्ट्र भक्ति और अपना सर्वस्व अर्पण देश पर न्योछावर करने की थी।

कार्यक्रम में ये गणमान्य एवं वरिष्ठजन रहे मौजूद

» इस अवसर पर शाहपुरा नगर से रामस्वरूप काबरा,कन्हैयालाल धाकड़, जयदेवजोशी,जगदीश पा-रीक, रामप्रसाद सेन, दिनेश सिंह, सरोज राठौड़, मोहन कोली, महावीर दिक्षित, रामप्रसाद पारीक, कैलाश चारण, भगवत सिंह लुलास,रामेश्वर लाल धाकड़,राजेश सोलंकी सत्यनारायण सेन हर्षित सिंह,जितेंद्र सिंह,धेर्यवर्धन सिंह, सुमंत कुमार व्यास,महेंद्र व्यास, दिलीप तांडी,लोकेश कुमार शर्मा पण्डेर,भंवर टांक,बाल कृष्ण शर्मा, राजेन्द्र शर्मा, दामोदर शाह जहाजपुर एवं देवखेड़ा से बसंत वैष्णव मांधुदास बरदू जाट आदि गणमान्य लोग समारोह में उपस्थित हो कर शहीद प्रताप के बलिदान को याद करते हुए श्रदांजली अर्पित की।संचालन रघुवीर सिंह जाड़ावत ने किया।

● राष्ट्रीय कवि कैलाश मंडेला ने देग्या कुर्बानी खेल्या रे खूनी फाग गीत प्रस्तुत किया। तो सदन तालियों से गुज गया।

» बाहर से आमंत्रित स्वतंत्रता सेनानियो के परिवार जनों का अतिथियों के हाथों सम्मानित किया गया।कार्यालय जिला कलक्टर परिसर में बलिदानी बारहठ परिवार की तस्वीर का लोकार्पण किया गया।संस्थान प्रतिवेदन पढ़ते हुए जाड़ावत ने पिछले वर्षो किए कार्यों को रेखांकित किया। वही आगामी योजना में बारहठ हवेली में राजस्थान के स्वतंत्रता सेनानी, की चित्र प्रदर्शनी लगवाने और बारहठ वीरों की बलिदानी गाथाओं को चित्र द्वारा दिखाना बताए जाए।इस हेतु जिला कलक्टर ने एलएनजे भीलवाड़ा ग्रुप के ओएसडी रजनीश वर्मा से ग्रुप से सहयोग तथा यथासंभव मदद का आग्रह किया।ध्यान रहे की एलएनजे भीलवाड़ा ग्रुप भी पूर्व में भी बारहठ क्रांति वीरों के आयोजनों में आर्थिक सहयोग करता रहा है।

● स्वतंत्रता सेनानी आये एक मंच पर.

» स्वतंत्रता सेनानी परिवार ,राजसमंद,टोक, कोटा, भीलवाड़ा,उदयपुर, जहाजपुर, पंडेर, से 20 परिवार जन आए थे। उन्ही में दीपक व्यास ने सभी परिवार जनों की ओर से कहा कि यह एक सार्थक प्रयास है, जो हम सभी को आज एक मंच पर उपस्थित किया है। हम विश्वास दिलाते है की आने वाले समय में हम सभी के प्रयासों से स्वतंत्रता सैनानी के सम्मान में कुछ अच्छा कर पाएंगे।आमंत्रित स्वतंत्रता सेनानी भूरालाल व्यासपण्डेर,मथुराप्रसाद वैद्य,कन्हैयालाल शाह जहाजपुर,धन्नालाल ताम्बी, जगन्नाथ जाट पण्डेर, रमेश चंद्र व्यास,सीतारामदास फतहकरण चारण, देवकिंदनखंडेलवाल,भवर लाल सोनी, लादूराम व्यास के परिवारजनों को सम्मानित किया गया।इसके साथ ही उदयपुर से महेंद्र सिंह चारण और टोक से जयदेव सिंह झीबा को संस्थान के कार्यों में विशेष सहयोग पर सम्मानित किया गया।आभार ज्ञापित संस्थान अध्यक्ष शंकर लाल जोशी ने किया एवं सभी सहयोग देने वाली संस्थाओंऔर जिला प्रशासन, नगर परिषद का सहयोग हेतु आभार ज्ञापित किया। साथ ही उपस्थित अतिथियों शहीद परिवारजनों एवम् नगर के गणमान्य लोगो की उपस्थिति से सभा भवन खचाखच भरा था। सभी का आभार ज्ञापित किया।क्विज प्रतियोगिता में प्रथम अंकिता चारण मंडपीय भील.,द्वितीय भरत कुमावत शाहपुरा ,तृतीय राजपाल सिंह चुंडावत राजसमंद रहे संस्थान द्वारा इन्हे नकद पुरुस्कार और स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए।

संक्षिप्त समाचार

बिजली व पेयजल को लेकर भारतीय किसान संघ ने उपखंड अधिकारी को सौपा ज्ञापन

चमकता राजस्थान। चौहमला!(रमेश मोदी)। अघोषित बिजली कटौती को लेकर भारतीय किसान संघ ने गुरुवार को मुख्यमंत्री के नाम उपखंड अधिकारी गंगधार को ज्ञापन सौंप कर अघोषित विद्युत कटौती बंद करने व पर्याप्त जलापूर्ति करने की मांग की। तहसील अध्यक्ष ईश्वर सेन ने बताया कि क्षेत्र में अघोषित बिजली कटौती की वजह से जनजीवन बुरी तरह प्रभावित है, महिलाएं, बच्चे, बुजुर्गों का भीषण गर्मी से हाल बेहाल है, 3 दिन का अल्टीमेटम देते हुए कहा कि समय रहते कटौती बंद नहीं की गई तो आगे धरना प्रदर्शन भी किया जाएगा साथ ही बिजली कटौती से जलापूर्ति भी प्रभावित हो रही जिससे जल संकट गहरा गया है ग्रामीण क्षेत्र में भीषण गर्मी के चलते पेयजल संकट बना हुआ है जहां पर्याप्त जलापूर्ति की जाए। ज्ञापन देते समय जिला यु० ाप्रमुखविक्रमसिंह(बबलू)तहसील मंत्री बृजपाल सिंह,प्रहलाद सिंह, रणविर सिंह,प्रधान सिंह, दशरथ सिंह, कमल सिंह, मेहरबान सिंह, अर्जुन सिंह, दिलीप सिंह, प्रकाश, धारा सिंह, नागु नाथ सहित कई कार्यकर्ता मौजूद थे।

उपखण्ड अधिकारी ने किया नसीराबाद का औचक निरीक्षण, दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

चमकता राजस्थान। श्रीनगर (रघुनन्दन पारीक) श्रीनगर दिनांक 23.05.2024 को प्रातः 09:55 पर उपखण्ड निरीक्षण द्वारा बिजली विभाग व जन स्वास्थ्य अभियंत्रिकी विभाग नसीराबाद का औचक निरीक्षण किया गया। औचक निरीक्षण के दौरान बिजली विभाग में उपस्थिति पंजिका का निरीक्षण करने पर यह पाया गया की 07 कार्मिक अनपुस्थित पाये गये व जन स्वास्थ्य अभियंत्रिकी विभाग में 01 कार्मिक अनुपस्थित पाया गया। उक्त कार्मिकों की कार्यालय समय में अनुपस्थित होने के संबंध में उपखण्ड अधिकारी द्वारा उक्त कार्मिकों के विरूद्ध उच्च स्तर पर अग्रिम कार्यवाही हेतु लिखा गया।

तथागत गौतम बुद्ध जी की जयंती (बुद्ध पूर्णिमा) के पावन पर्व पर (भीम ज्योति) बुद्ध बिहार काजीपुरा धौलपुर में धूमधाम से मनाई

चमकता राजस्थान

धौलपुर(रामदास तरुण) दिनांक :-23/05/24 को बुद्ध पूर्णिमा के शुभ अवसर पर भारतीय बौद्ध महासभा एवं डॉ. भीमराव अंबेडकरअधिकारी एवं कर्मचारी संगठन के संयुक्त तत्वाधान में तथागत गौतम बुद्ध जी की जयंती के पावन पर्व पर (भीम ज्योति बुद्ध विहार) काजीपुरा धौलपुर में सभी बौद्ध अनुयायियों के द्वारा बहुत ही धूमधाम हर्षोल्लास के साथ बुद्ध वंदना से शुरुआत की गई! कार्यक्रम के संरक्षक भंते आनंद बौद्ध जी, मुख्य अतिथि बसेड़ी विधायक संजय जाटव, वशिष्ठ अतिथि डॉ. प्रिया आनंद आगले, सत्यवीर सिंह रिटायर्ड आई जी, राजेंद्र सिंह वर्मा, पूरनमल बेरी, सुनील नारोलिया, रामनाथ मेहरा, रोशन लाल बौद्ध, रामदास तरुण वरिष्ठ पत्रकार धौलपुर , सुआलाल प्रधान प्रतिनिधि सरमथुरा आदि मंच पर विराजमान अतिथियों का सभी बौद्ध अनुयायियों के द्वारा पुष्पमाला एवं पंचशील का दुपट्टा उड़ाकर गर्मजोशी से स्वागत सम्मान किया गया! इस कार्यक्रम के मौके पर सत्यवीर सिंह रिटायर्ड आईजी जयपुर द्वा-रा बताया गया कि राजा की पूजा राजा के स्थान पर होती है! मगर विद्वान की पूजा हर जगह होती है, करुणा के सागर हैं! जीव, जंतु, पशु, पंछी, मानव के प्रति दया भाव रखने वाले, तथागत गौतम बुद्ध थे! और तथागत गौतम बुद्ध ने यह भी कहा था, कि मुझे मत मानो, मेरी बातों को मत मानो, पर मेरे विचारों पर जरूर विचार कर लिया तो जीवन में वह निखार आएगा, कि आपका जीवन ही बदल जाएगा, दूसरी चीज यह भी बताई की शिक्षा के स्तर को रोजगार की ओर ले जाना चाहिए, राजेंद्र वर्मा द्वारा बताया गया के शिक्षा के क्षेत्र में हम बहुत पिछड़े हुए हैं! गरीब परिवार के बच्चों को फीस का सहयोग करें, किताबों का सहयोग करें, और शिक्षा के लिए प्रेरित करें, पूरनमल द्वारा बताया के प्रज्ञा, शील, मैत्री जो मोह को त्याग करती है! इस कार्यक्रम के मौके पर अतिराम सेमल, रामहित एएसआई भगवानदास आर.ए. सी. रामप्रसाद राघव, परसादी लाल भामाशाह, लाखन सिंह, जगदीश अध्यापक, सुरेशचंद सीबीआई अधिकारी,भंवर सिंह निरंकारी, केदार सिंह, कप्तान सिंह, राजेंद्र मौर्य आदि, कार्यक्रम में मंच संचालन मुकेश राजोरा द्वारा किया गया!

छापोली में बुद्ध पूर्णिमा पर हर्षोल्लास से मनाई गौतम बुद्ध की जयंती

● भगवान गौतम बुद्ध के जीवन पर डाला प्रकाश

चमकता राजस्थान। उदयपुरवाटी '(सुमेर सिंह राव)। निकटवर्ती ग्राम छापोली में गुरुवार को बुद्धिस्ट इंटरनेशनल नेटवर्क, राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग मोर्चा एवं क्षत्रिय मूलनिवासी महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में अंबेडकर नगर छापोली में तथागत गौतम बुद्ध की जयंती (बुद्ध पूर्णिमा) हर्षोलास से मनाई गई।भंते नागसेन वासुदेव नागपुर महाराष्ट्र की मुख्य आतिथ्य में तथा महंत किशननाथ बुद्ध पंचवटी धाम गणेश्वर नीमकाथाना की अध्यक्षता में बुद्ध पूर्णिमा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर गौतम बुद्ध के जीवन व दर्शन पर बात की तथा अपने प्रबोधन कार्यक्रम में कहा कि अशोक महान बुद्ध के धम्म के कारण ही बन पाया। बुद्ध अपने दोनों पैरों से चलकर एशिया, यूरोप, अमेरिका महाद्वीप तक फैला। बुद्ध का संदेश करुणा, शांति, भाईचारा का संदेश दिया व मध्यम मार्ग की बात कही और कहा कि अपने तर्क की कसौटी पर परखो और उसके बाद उस पर विश्वास करों। बौद्ध धम्म वैज्ञानिकता का धम्म है तर्क का है।बुद्ध धम्म आज दुनिया के अनेकों देशों में पहुंच गया है।इस अवसर पर हंसराज कबीर एडवोकेट ने कहा कि हमे अपने अस्तित्व को पहचानना चाहिए। रोशन मनकसास ने कहा कि हमे बुद्धा के बताए रास्ते पर चलना चाहिए तथा अपना दीपक आप बने, उमराव वर्मा, सुदेश कुमार, विजेंद्र भीमप्रेमी आदि न

पानी की समस्या का शीघ्र समाधान करने का दिया आश्वासन

उदयपुरवाटी उपखंड अधिकारी ने गांवो में लिया पानी की समस्या का जायजा

चमकता राजस्थान

उदयपुरवाटी '(सुमेर सिंह राव जल संघर्ष समिति के भयंकर क़ल्लित वाले पहाड़ी बैल्ट के लिए शुद्ध पेयजल हेतु बार बार अनेक ज्ञापन देने के बाद चौफुल्या चंवरा के इर्द-गिर्द गांवों में आखिर उपखंड अधिकारी मोनिका सामोर ने चंवरा में मेघवाल मोहल्ला व बालाजी मंदिर के पास व चौफुल्या सहित अन्य जगहों का भ्रमण कर जायजा लिया है,इस दौरान समिति अध्यक्ष नथू राम सैनी, चंवरा सरपंच धर्मपाल व वार्ड पंच भोला राम ने एसडीएम व पीएचइडी अभियंता अनूप गुप्ता के साथ होकर सबसे ज्यादा पेयजल किल्लत वाली वार्ड ढाणियों में दौरा करवाकर लोगों से मुलाकात की, इस दौरान लोगों ने रखी खोटी सुनाई व लोग अधिकारियों से उलझते नजर आए। लोगों अत्यधिक आक्रोशित व गुस्से में नजर आए समिति अध्यक्ष नथू राम ने उपखंड अधिकारी महोदय मोनिका सामोर,को कहा कि आज कल में संपूर्ण पहाड़ी क्षेत्र में शुद्ध पेयजल टैंकर सप्लाई , सुचारू,सरल व पारदर्शी तरीके से शुरू नहीं की तो मजबूर होकर लोग एसडीएम ओफिस का घेराव करेंगे, जिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रशासन की होगी ,इस पर उपखंड अधिकारी मोनिका सामोर ने अगले 24 घंटे में 8 गांवों सहित संपूर्ण पहाड़ी बैल्ट में टैंकर सप्लाई सुनिश्चित करने में कोई कमी नहीं छोड़े जाने का पूरा भरोसा दिलाया है। पूर्ण आश्वाशन मिलने पर लोग थोड़ा शांत हुए। उपखंड अधिकारी मोनिका सामोर ने अन्नपूर्णा रसोई का मौका मुआवना कर , इंदिरा अन्नपूर्णा रसोई को भी चंवरा से बढ़िया जगह चौफुल्या को बताकर चौफुल्या में स्थानांतरण की बात सरपंच धर्मपाल से कही।चौफुल्या स्टैण्ड पर प्रायः झाम रहने की समस्या से उपखंड अधिकारी का लोगो ने ध्यान आकर्षित किया,इस पर संज्ञान लेते हुए इस समस्या से निजात दिलाने में भी उपखंड अधिकारी ने सहमति जताई है।पानी की टंकियों की प्रायः सफाई नहीं होने पर भी नथू राम ने उपखंड अधिकारी का ध्यान आकर्षित किया।संघर्ष समिति संयोजक के के सैनी एक व्यक्तव्य जारी कर प्रशासन को चेताया है ,24 घंटे की जगह 36 घंटे संघर्ष समिति प्रशासन को दे रही है,समस्त पह-ाड़ी बैल्ट सहित संपूर्ण उदयपुरवाटी क्षेत्र में पेयजल टैंकर सप्लाई सुनिश्चित हो जाती है अन्यथा 27 मई को उदयपुरवाटी संघर्ष समिति व,समस्त ग्राम ईकाई, संघर्ष समिति के तत्वावधान में उपखंड कार्यालय का घेराव किया जाएगा जिसकी समस्त जिम्मेदारी प्रशासन की होगी। जनसंख्या अनुपात में गांव वायिज शुद्ध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित कर टैंकरों की संख्या बढ़ाने की भी सैनी ने मांग की है।इस दौरान उक्त के अलावा ककराना सरपंच भाता राम, पूर्व सरपंच रामेश्वर लाल,मंखन लाल बाबू लाल,मंगला राम,नोरंग लाल कुमावत, हनुमान, रामचंद्र, गणेश कुमावत,पआपउलआन सिंह शेखावत, महेंद्र शर्मा,सज्जन पा-रीक सहित दर्जनों लोग उपस्थित रहे।

एक नजर

दिवंगत सुशील मोदी को श्रद्धांजलि देने अमित शाह आ रहे पटना, करेंगे दो चुनावी सभा

पटना। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह गुरुवार की शाम पटना आ रहे है। शाम पांच बजे पटना पहुंचेंगे। इसके बाद वह राजेन्द्रनगर स्थिति भाजपा नेता सह बिहार के पूर्व उपमुख्यमंत्री दिवंगत सुशील मोदी के आवास पर पहुंचेंगे और उनके परिजन से मुलाकात कर उन्हें श्रद्धांजलि देंगे। दिवंगत नेता के परिजनों से मिलकर उन्हें ढांढस भी बढ़ाएंगे। गुरुवार के कार्यक्रम के बाद शुक्रवार 24 मई को अमित शाह बिहार के आरा और जहानाबाद में चुनावी जनसभाओं को संबोधित करेंगे।

महराजगंज लोस सीट पर वोटिंग को लेकर छपरा में 25 मई तक बढ़ाई गयी इंटरनेट पर बैन

पटना। बिहार के छपरा में पिछले दिनों हुए चुनावी हिंसा में एक की मौत के बाद एहतियात के तौर पर प्रशासन की ओर से इंटरनेट पर लगाये गये प्रतिबंध की अवधि और दो दिनों के लिए बढ़ा दी गई है। छपरा में अब 25 मई तक इंटरनेट सेवा पर पाबंदी रहेगी। इससे पूर्व गृह विभाग ने पहले 23 मई तक ही इंटरनेट सेवा बाधित रखने का निर्देश दिया था लेकिन, लोकसभा चुनाव के छठे चरण में महाराजगंज सीट पर होने वाले मतदान को देखते हुए अब इस रोक की अवधि बढ़ाकर 25 मई तक कर दी गई है। छपरा में हुए मतदान के दौरान और उसके बाद हुए बवाल मामले में पुलिस ने राजद एवं भाजपा के 150 समर्थकों पर केस दर्ज किया है। छपरा के पुलिस अधीक्षक डॉ गौरव मंगला ने कहा कि इंटरनेट पर बैन दो दिन के लिए बढ़ा दी गयी है। स्थिति पूर्णतया नियंत्रण में है। लोकसभा चुनाव के छठे चरण में महाराजगंज सीट पर होने वाले चुनाव को देखते हुएअब इस रोक की अवधि बढ़ाकर 25 मई तक कर दी गयी है।

एससीएसटी एक्ट सहित अन्य धाराओं में अदालत ने 4-4 वर्ष की सुनायी सजा

किशनगंज। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम सह विशेष न्यायाधीश एससीएसटी कुमार गुंजन की अदालत ने एक अहम फैसला सुनाया। उन्होंने चार आरोपियों को सजा सुनायी है, जिसमें जिले के कुर्लिकोट थाना क्षेत्र निवासी आरोपी शिव कुमार देव व नंदू देव को एससीएसटी अधिनियम की धाराओं में 4-4 वर्षों के कारावास व 10 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनायी है। अर्थदंड की राशि जमा नहीं करने पर दो माह अतिरिक्त सजा काटनी होगी। वही अन्य दो आरोपियों को धारा 323 के तहत दोषी पाया गया लेकिन पहली गलती होने के कारण अदालत ने दोनो को फटकार लगाते हुए दोबारा ऐसी गलती नहीं करने की चेतावनी देकर छोड़ दिया। विशेष लोक अभियोजक एससीएसटी अधिनियम आदू लाल ने अदालत में सजा की बिंदु पर दलीलें पेस की थी।

बच्चों के विवाद में दो पक्ष आपस में भिड़े

नवादा। नवादा नगर के बुंदेलखंड थाना क्षेत्र के दर्जी मुहल्ला में बच्चों के विवाद में गुरुवार को दो पक्षों के बीच रोडेबाजी की घटना हुई। घटना के बाद एक्शन में आई पुलिस ने दोनों पक्षों के 9 लोगों को हिरासत में लिया। दोनों ओर से प्राप्त आवेदन के आलोक में प्राथमिकी दर्ज कर पुलिस आगे की कार्रवाई में जुट गई है। इलाके में तनाव व्याप्त है। काफी मशक्कत कर पुलिस ने हालात पर काबू पाया। घटना की पुनरावृति न हो इसके लिए उक्त मुहल्ले में दो दंडाधिकरी अमित कुमार व नागमणी सिंह के साथ पुलिस पदाधिकारी और जवानों को तैनात किया है, जो दोनों समुदाय के लोगों पर पैनी नजर रख रहे हैं। बताया जाता है कि मंगलवार की देर शाम खेलने के दौरान दो बच्चों के बीच किसी बात को लेकर विवाद हो गया। दोनों बच्चों ने अपने-अपने परिवार को घटना की जानकारी दी, जिसके बाद दोनों के परिवार आज सड़क पर उतर गए और देखते ही देखते रोड़ेबाजी शुरू हो गई।

अपराधियों ने पोल्ट्री फार्म के कर्मी को मारी गोली

पूर्वी चंपारण। जिले के मधुबन थाना क्षेत्र में विशुनपुर तारा गांव स्थित दीपक पांडेय के पॉल्ट्री फार्म में कार्यरत एक कर्मी को बदमाशों ने बुधवार को गोली मार कर घायल कर दिया। घायल व्यक्ति की पहचान थाना क्षेत्र के नारायणपुर गांव के वीणा सिंह के 25 वर्षीय पुत्र अभय सिंह के रूप में हुई है।अभय को लगी गोली आर पार हो गयी है,जिसको इलाज के लिए मधुबन सीएचसी लाया गया। जहां उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए चिकित्सको ने हायर सेंटर रेफर कर दिया है। घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस ने घायल के शर्ट में फंसी पिस्टल का पिलेट बरामद किया है। पॉल्ट्री फार्म संचालक दीपक पांडेय ने ही पुलिस को फोन कर घटना की सूचना दी जहां पुलिस पहुंच लोगों के सहयोग से अस्पताल पहुंचाया।

बारिश के बाद गिरा तापमान, गर्मी से राहत

कोलकाता। पश्चिम बंगाल की राजधानी कोलकाता समेत राज्य के अन्य हिस्सों में लगातार बारिश के बाद तापमान में गिरावट का सिलसिला शुरू हो गया है। अलीपुर स्थित मौसम विभाग के क्षेत्रीय मुख्यालय की ओर से जारी बयान में बताया गया है कि राजधानी कोलकाता में पिछले 24 घंटे के दौरान 72.2 मिलीमीटर बारिश रिकार्ड की गई है। इसकी वजह से तापमान में गिरावट का सिलसिला शुरू हुआ है। न्यूनतम तापमान 26.4 डिग्री सेल्सियस है जो सामान्य से एक डिग्री कम है जबकि अधिकतम तापमान सामान्य से एक डिग्री अधिक 36.01 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया है। कोलकाता के अलावा हावड़ा, हुगली, उत्तर और दक्षिण 24 परगना, पूर्व और पश्चिम मेदिनीपुर, पुरुलिया, बांकुड़ा समेत राज्य के अन्य हिस्सों में भी तापमान 26 से 36 डिग्री सेल्सियस के बीच बना हुआ है। इस पूरे हफ्ते इसी तरह का मौसम रहने वाला है। आज भी आसमान में बादल छाए हुए हैं और बारिश की संभावना जताई गई है।

बंगाल के तट पर रविवार को पहुंचेगा चक्रवात रुमेल

कई राज्यों में तूफान की आशंका

इस प्री-मॉनसून सीजन में बंगाल की खाड़ी में यह पहला चक्रवात है

संवाददाता

कोलकाता । बंगाल की खाड़ी में बने चक्रवर्ती तूफान रुमेल धीरे-धीरे मजबूत होकर पश्चिम बंगाल और बांग्लादेश के तटीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने लगा है। मौसम विभाग (आईएमडी) की तरफ से गुरुवार को दी गई जानकारी के मुताबिक बंगाल की खाड़ी के ऊपर निम्न दबाव बढ़ता जा रहा है और रविवार शाम तक भीषण चक्रवाती तूफान के रूप में बांग्लादेश और आसपास के पश्चिम बंगाल तटों तक पहुंच जाएगी। इसके प्रभाव से तेज आंधी-तूफान के साथ भारी बारिश होगी।

इस प्री-मॉनसून सीजन में बंगाल की खाड़ी में यह पहला चक्रवात है। हिंद महासागर क्षेत्र में चक्रवातों के नामकरण की प्रणाली के अनुसार, इसे रुमेल नाम दिया गया है। यह शुक्रवार सुबह तक मध्य बंगाल की खाड़ी पर दबाव में तब्दील हो जाएगा। आईएमडी की वैज्ञानिक मोनिका शर्मा ने बताया कि यह शनिवार सुबह चक्रवाती तूफान में बदल कर तेज हो जाएगा और रविवार शाम तक गंभीर चक्रवाती तूफान के रूप में बांग्लादेश और निकटवर्ती पश्चिम बंगाल तट पर पहुंच जाएगा।

आईएमडी के अनुसार, रविवार को चक्रवात की गति 102 किलोमीटर प्रति घंटे हो सकती है। मौसम कार्यालय ने 26 मई को पश्चिम बंगाल, उत्तरी ओडिशा, मिजोरम, त्रिपुरा और दक्षिण मणिपुर के तटीय जिलों में भारी बारिश की चेतावनी दी है। इसकी वजह से राज्य सरकार ने पहले से सावधानी बरतनी शुरू कर दी है और पश्चिम बंगाल के तटीय क्षेत्रों में बसे लोगों को सुरक्षित ठिकानों पर पहुंचाया जा रहा है।

जीतन राम मांझी के निशाने पर तेजस्वी

केक खरीदकर लाया गया या किसी से रिश्वत में ही

एजेंसी

पटना। लोकसभा चुनाव 2024 के लिए दिग्गज नेताओं के द्वारा ताबड़तोड़ चुनाव प्रचार किए जा रहे हैं। अंतिम बचे दो चरणों के मतदान को लेकर सभी दलों के नेता अपने प्रत्याशियों के पक्ष में दिनरात जनसभाएं कर रहे हैं। बिहार की बात करें तो सबसे ज्यादा जनसभा आरजेडी नेता तेजस्वी यादव ने की है। तेजस्वी ने जनसभाओं का दोहरा शतक पूरा कर लिया है। 200 रैली हो जाने की खुशी में वीआईपी प्रमुख मुकेश सहनी ने तेजस्वी यादव को सरप्राइज दिया और केक कटवाया और वो भी हेलीकॉप्टर के अंदर। गुरुवार को सोशल मीडिया मंच एक्स पर तेजस्वी और मुकेश सहनी का एक और वीडियो सामने आया है। इस वीडियो में दोनों

हेलिकॉप्टर में केक काटते नजर आ रहे हैं। इसे लेकर पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी ने तंज कसते हुए नौकरी के बदले जमीन का जिक्र करते हुए इस केक को भी रिश्वत में लिया गया करार दिया है। जीतन राम मांझी ने एक्स पर पोस्ट शेयर कर लिखा है कि नौकरी के लिए तो गरीबों की जमीन लिखवा ली। हेलिकॉप्टर में केक खरीद कर लाया गया था कि वह भी किसी से रिश्वत में ही मंगाया गया था।

मतदान से दो दिन पहले उत्तप्त नंदीग्राम

बीजेपी ने किया प्रदर्शन

कोलकाता। संवाददाता

मतदान से दो दिन पहले उत्तप्त तमलुक लोकसभा आसन। महिला भाजपा समर्थक की हत्या के अगले दिन नंदीग्राम युद्ध का मैदान बन गया। गुरुवार सुबह से ही बीजेपी कार्यकताओं और समर्थकों ने बिरोध प्रदर्शन किया। गत काल अभिषेक बनर्जी नंदीग्राम में तृणमूल उम्मीदवार के समर्थन में रैली में मौजूद थे।

उस रात सोनाचूरा के मनसाबाजार इलाके में एक बूथ के बाहर बीजेपी समर्थकों पर हमला करने का आरोप तृणमूल समर्थकों पर लगा है। बीजेपी की एक महिला समर्थक की कथित तौर पर धारदार हथियार से काटकर हत्या कर दी गई। 7 और लोग घायल हो गए है। इसके विरोध में आज सुबह बीजेपी नेता और कार्यकर्ता नंदीग्राम थाने का घेराव कर प्रदर्शन कर रहे हैं। आग लगाकर और पेड़ फेंककर सड़क भी जाम कर दी गई। इलाके में पुलिस पिकेट के साथ बड़ी संख्या में पुलिस बल तैनात किया गया है।

केंद्रीय बल भी है। दूसरी और, विपक्षी नेता शुवेंदु अधिकारी ने अभिषेक पर तंज कसते हुए कहा, 'यह खून-खराबा अभिषेक की शह पर हुआ है। हार निश्चित समझ कर हमला कर रहे है।'

महिषादम में मुख्यमंत्री के खिलाफ बिरोध प्रदर्शन

कोलकाता। संवाददाता

भारत सेवाश्रम संघ के वरिष्ठ साधु स्वामी प्रदीप्तानंदजी (कार्तिक महाराज) को माननीय मुख्यमंत्री द्वारा दुर्व्यवहार के विरोध में जागरूक नागरिक समाज, भक्त मंडली, विश्व हिंदू परिषद, जागरण मंच, हिंदू एकता सहित विभिन्न संगठनों ने एकजुट होकर महिषादल से मार्च निकाला। तेरपेक्षा चौराहे से लेकर सरस्वती शिशु बिद्या मंदिर तक विरोध मार्च में क्षेत्र के आम

लोग शामिल हुए और मुख्यमंत्री की टिप्पणी का जमकर विरोध किया।

त्रिपुरा के मुख्यमंत्री ने ममता सरकार पर साधा निशाना

कोलकाता। कलकत्ता हाई कोर्ट ने वर्ष 2010 के बाद से लेकर आज तक ममता सरकार के शासन में जारी किए गए सभी ओबीसी सर्टिफिकेट को रद्द करने का आदेश दिया है। इसकी वजह है कि नियमों के विपरीत ओबीसी के नाम पर बड़ी संख्या में मुस्लिम समुदाय के लोगों को यह सर्टिफिकेट दिया गया है। इसे लेकर त्रिपुरा के मुख्यमंत्री माणिक साहा ने ममता बनर्जी की सरकार पर जमकर निशाना साधा है। माणिक साहा ने उत्तर कोलकाता

संसदीय सीट से भाजपा उम्मीदवार तापस रॉय के समर्थन में गुरुवार को कोलकाता में जनसंपर्क अभियान चलाया। उन्होंने कलकत्ता हाई कोर्ट द्वारा ओबीसी सर्टिफिकेट रद्द किए जाने को लेकर पत्रकारों के एक सवाल का जवाब देते हुए कहा, 'हमारा केंद्रीय नेतृत्व शुरू से कहता रहा है कि यहां तुष्टीकरण की राजनीति चल रही है।

उन्होंने ओबीसी के साथ गैरकानूनी काम किया है। आखिर में क्या हुआ उच्च न्यायालय ने इसे रद्द कर दिया। यह पश्चिम बंगाल में क्या हो रहा है, इसका एक प्रमाण है।'

बच्चों ने अपने माता-पिता से भरवाया संकल्प पत्र

पूर्वी चंपारण। जिले के पताही स्थित एसआरएच कैंब्रिज वर्ल्ड स्कूल के बच्चो ने मतदान करने को लेकर अपने अपने माता पिता से संकल्प पत्र भरवाया है। स्कूल प्रबंधन ने इस संकल्प पत्र को बच्चों को दिया था,जिसे बच्चो ने माता-पिता से भरवाकर स्कूल प्रबंधन को सौंपा है। दो भागो में बंटे इस संकल्प पत्र के पहले भाग में बच्चे अपने माता-पिता को पत्र के तर्ज पर मतदान करने के लिए अपील कर रहे है। इसमें लिखा गया है कि मेरे प्यारे मम्मी पापा, मुझे पता है कि आप मुझे बहुत प्यार करते है। मेरे भविष्य को अच्छा बनाने के लिए दिन रात मेहनत करते है। मेरा भविष्य देश के मजबूत लोकतंत्र से भी जुड़ा है। इसलिए मै आपसे एक संकल्प करवाना चाहता/चाहती हूं कि 25 मई को लोकसभा चुनाव में आप वोट डालने जरूर जाएंगे। मुझे यकीन है कि आप यह वायदा निभाएंगे। वहीं संकल्प पत्र के दूसरे भाग में माता-पिता का संकल्प शामिल किया गया है।

डैमेज बालों को बेहतर बनाने के टिप्स

कोलकाता। संवाददाता

हर किसी को अपनी शादी का बेसब्री से इंतजार रहता है और इस दिन आप अपने लिए सबकुछ बेहतरीन चाहते हैं। सभी चीजों की सटीक प्लानिंग के बीच, सबसे अहम होता है आपका लुक। इस खास मौके पर आपकी खूबसूरत हेयरस्टाइल आपको और भी हसीन और आकर्षक बना देती है। हालांकि, तेज गर्मी और पसीने से बालों के डैमेज और बेजान होने का खतरा बढ़ जाता है।

इतने खास मौके से पहले अपने बालों के डैमेज को ठीक करने और उन्हें बेहतर बनाने के लिए नियमित रूप से अपने बालों में तेल लगाने से शुरूआत करें। हेयर एंड केयर ट्रिपल ब्लेंड हेयर ऑयल जैसा प्राकृतिक तथा भरोसेमंद तेल चुनें। इस तेल में एलोवेरा जोकि बालों की कंडीशनिंग करने और उनका रूखापन और टूटना-झड़ना कम करने के लिए जाना जाता है, ऑलिव ऑयल, जोकि बालों की चमक बरकरार रखने में आपकी मदद करता है, और ग्रीन टी जोकि

बालों की सेहत को बेहतर बनाने के लिए मशहूर है, का बड़ा ही बेजोड़ मेल है। अपने बालों को नियमित रूप से स्वस्थ रखना जरूरी है, ऐसे में यहां कुछ ऐसे टिप्स दिए गए हैं, जो आपको शादी से पहले मुलायम, कोमल और पोषण से भरपूर बालों का तोहफा देंगे। सही हेयर ऑयल चुनें: प्राकृतिक तत्वों से युक्त सही हेयर ऑयल चुनने से बालों को मुलायम व कोमल बनाए रखने में मदद मिलेगी। इसका सबसे अच्छा तरीका है कि हेयर एंड केयर ट्रिपल नॉन-स्टिकी हेयर ऑयल से अपने बालों की मालिश करें। अपने बालों को धोने से पहले एलोवेरा, ऑलिव ऑयल और ग्रीन टी से युक्त इस हेयर ऑयल से मसाज करें। यह नॉन-स्टिकी, लाइट हेयर ऑयल आपके बालों की मरम्मत करता है और आपको चमकदार एवं मुलायम बाल मिलते हैं।

बालों को कटवाना व ट्रिम करवानाः इतने खास दिन से पहले अपने बालों को ट्रिम रखने की सलाह दी जाती है। ऐसा करने से धूप से हुए डैमेज की वजह से दोमुंहे बालों की समस्या से आप बचे रहेंगे। साथ ही बालों को झड़ने से बचाने में भी मदद मिलेगी। हाइड्रेट और सेहतमंद रहेंः हाइड्रेट रहने से ना केवल आपके शरीर को आवश्यक पोषक तत्व मिलते हैं, बल्कि आपके बालों को भी पोषण मिलता है। इससे आपके बाल खूबसूरत होंगे और आप उन्हें लहराने का आंनद ले पाएंगे। इन टिप्स की मदद से आपके बाल कोमल, चमकदार और पोषण से भरपूर होंगे। उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचेगा, जिससे शादी के दिन आपके बाल निश्चित तौर पर खूबसूरत लगने वाले हैं।

आईईएम ने अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड में प्रतिभाओं का जश्न मनाया

कोलकाता। संवाददाता

इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट, कोलकाता (आईईएम-यूईएम ग्रुप) ने रोटरी क्लब ऑफ साल्ट लेक सिलिकॉन वैली और स्मार्ट सोसाइटी, यूएसए के साथ साझेदारी में मंगलवार को अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड के लिए पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया।

इस समारोह में एक पुरस्कार प्रस्तुति, भाषण, एक परियोजना प्रदर्शन और अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों की नवीन सामग्री और अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करने वाली एक वैज्ञानिक पोस्टर प्रदर्शनी प्रदर्शित की गई। कार्यक्रम के दौरान 108 पुरस्कार, पदक और रैंक सर्टिफिकेट वितरित किए गए। अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड में कक्षा 1 से 12 तक के लिए गणित, विज्ञान और अंग्रेजी को शामिल किया गया था । जनवरी 2024 में 36 ओलंपियाड आयोजित किए गए और 14 देशों और विभिन्न भारतीय राज्यों के लगभग 1000 छात्रों ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम की शोभा डॉ. अरुण कुमार बार, प्रिंसिपल, आईईएम साल्ट लेक; डॉ. प्रबीर कुमार दास, एचओडी, बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज डिपार्टमेंट; और डॉ. सामापिका दास विश्वास, काउंसलर एवं असिस्टेंट एचओडी, बेसिक साइंस एंड ह्यूमैनिटीज डिपार्टमेंट, तथा अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने बढ़ाई।

होटल में लगी आग, 15 लाख की संपत्ति जलकर खाक

होटल में आग लगने से रखा गैस सिलेंडर हुआ ब्लास्ट

एजेंसी

नवादा। नवादा के पॉश इलाके की एक होटल में गुरुवार को अचानक भीषण आग लग गयी ,जिससे होटल पूरी तरह जलकर राख हो गई। इस अगलगी में लाखों की संपत्ति जलकर राख हो गया। काफी मशक्कत के बाद दमकल की चार गाड़ियां ने आग पर काबू पाया। घटना आग लगने की वजह होटल के पास से गुजर रहे बिजली तार की शॉट सर्किट होना बताया जा रहा है। इस आगलगी में किसी व्यक्ति की

हताहत की सूचना नहीं है। वहीं 15 लाख की समाप्ति जलने की बात कही जा रही है ।

यह घटना नवादा जिले के कलाली रोड स्थित होटल खाना खजाना की है ,जहां अचानक तेज आग लग गयी। आग के लपेटे होटल से बाहर निकल रहे थे। स्थानीय लोगों ने घटना की सूचना होटल संचालक और पुलिस को दिया । घटना की सूचना पर पहुंची दमकल की चार गाड़ियों ने घंटों मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। तब तक होटल का सारा समान जलकर खाख हो गया। आग होटल के तीन मंजिलें तक पहुंच गया था। आग इतना तेज था कि दूर -दूर तक किसी को सटने नहीं दे रहा था।

बिजली तार से शॉट लगाने पर लगी आग

होटल संचालक रजत शर्मा ने बताया कि गुरुवार को 8 बजे स्थानीय लोगों ने फोन से सूचना दी कि आपके होटल में आग लग गयी है, जिसके बाद मैं होटल पहुंचा तो देखा आग पूरे होटल में लग गयी है । बताया गया है कि खाना- खजाना नामक होटल के छत से बिजली के तार का मकड़जाल लगा था ,उसी से शॉट लगा और आग ने भयावह रूप ले लिया है। अगलगी के बाद होटल में रखी गैस सिलेंडर भी आग लगाने के कारण फट गयी। धमाके के बाद सिलेंडर का गैस पूरे बिल्डिंग में फैल गया और पूरे बिल्डिंग में आग लग गयी। दमकल कर्मियों ने धधकते आग पर काबू पा लिया है लेकिन होटल का सारा समान जलकर राख हो गया। होटल संचालक ने बताया कि इस अगलगी में उनके होटल के लगभग 15 लाख की संपत्ति जलकर राख हो गई।

बुद्ध पूर्णिमा पर देश-विदेश से आये बौद्ध भिक्षुओं ने विश्व शांति का दिया संदेश

कोलकाता। संवाददाता

दुनिया को अहिंसा मानवता और गैर-सांप्रदायिकता का संदेश देने वाले देश-विदेश के बौद्ध भिक्षुओं ने कोलकाता में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की प्रतिमा के नीचे विश्व शांति का संदेश दिया। 2568वीं बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर आज कोलकाता में गांधी प्रतिमा के नीचे सिद्धार्थ यूनाइटेड सोशल वेलफेयर मिशन द्वारा बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर 2568वां अंतर्राष्ट्रीय विशाखा दिवस एवं विश्व शांति सम्मेलन का आयोजन किया गया। भारत के अलावा, बौद्ध भिक्षु तिब्बत, चीन, म्यांमार, श्रीलंका, वियतनाम

और अन्य देशों से आए थे। सभी ने गौतम बुद्ध की प्रतिमा के सामने खड़े होकर विश्व शांति के लिए प्रार्थना की। इस कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों ने हिस्सा लिया. सिद्धार्थ यूनाइटेड सोशल वेलफेयर मिशन के महासचिव बुद्धप्रिय महाथेरो ने कहा कि वर्तमान समय में दुनिया भर में जो अशांति और अशांति का माहौल बना हुआ है, उससे छुटकारा पाने और विश्व शांति की रक्षा के लिए हमें गौतम बुद्ध के दिखाए रास्ते पर आगे बढ़ना चाहिए।

चुनावी घोषणाएँ और उनकी हक़ीक़त पर बुद्धीजीवी प्रबुद्धजनों की आयोजित हुई संगोष्ठी

मुखर रूप से खुलकर वास्तविकता पर हुए तर्क- वितर्क एवं परिचर्चा

चमकता राजस्थान

जयपुर,! (खलील कुरैशी) 23 मई । मुक्तमंच, जयपुर की 83वीं मासिक संगोष्ठी 'चुनावी घोषणाएँ और उनकी हक़ीक़त' विषय पर परम विदुषी योगिनी डॉ. पुष्पलता गर्ग के सान्निध्य एवं भाषाविद् डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई।जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. प्रवीणचन्द्र त्रिवेदी मुख्य अतिथि थे। 'शब्द संसार' के अध्यक्ष श्रीकृष्ण शर्मा ने संयोजन किया।अध्यक्ष डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' ने कहा कि लोकतन्त्र प्रत्येक पार्टी अपने-अपने ढंग से जनता को लुभाने और भरमाने की कोशिश करती है यहाँ तक कि झूठे आश्वासनों और धनबल, जनबल तथा बाहुबल का सहारा लिया जाता है। फलतः जनता बेरोज़गारी, ग़ैरबराबरी, महँगाई जैसी समस्याओं के दुष्चक्र में फ़ँसी रहती है। देखा गया कि अपराधियों का वर्चस्व बना रहता है।चुनावों की नियन्त्रक एवं नियामक संस्थाएँ जैसे पंगु हो गई हैं। जब तक जनता

स्वयं जाग्रत नहीं होगी, स्वार्थ केन्द्रित माफ़िया, चुने जाते रहेंगे ।ऐसे में बुद्धिजीवी, मीडियाकर्मी, धर्माचार्य, समाजसेवी एवं लोकतान्त्रिक संस्थाओं को लीड लेनी चाहिए अन्यथा स्वच्छ एवं निष्पक्ष चुनाव एक दिवास्वप्न ही बना रहेगा।

मुख्य अतिथि शिक्षाविद पूर्व वीसी प्रो. प्रवीणचन्द्र त्रिवेदी ने कहा कि हमें उच्च शिक्षा, सर्वेक्षण, अन्वेषण और अनुसन्धान पर 70,000 करोड़ रुपए होना था पर हम जी.डी.पी. का मात्र दो प्रतिशत ही व्यय करते हैं। फलतः वैज्ञानिक अनुसन्धान, प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हम दूसरे देशों के पिछलग्गू बने हुए हैं। हमें तकनीकी विकास के लिए प्राथमिकता से काम करना होगा। हमारे यहाँ के लोग विदेशों में जाकर नोबेल लोरिएट बनते हैं जबकि यहाँ ही ऐसी सुविधाएँ उपलब्ध होनीं चाहिए। मु×फ़्त वस्तुओं का वितरण ग़लत है और नेशनल मोनेटरिंग कमेटी के गठन होना चाहिए आईएएस रिटा.अरुण ओझा ने कहा कि सामाजिक-आर्थिक विकास की गति टिकाऊ होनी चाहिए । इस हेतु जनता का जागरण जरूरी है। शिक्षा प्राथमिकताओं में सबसे नीचे है, मात्र दो प्रतिशत ही जी. डी.पी. का शिक्षा पर खर्च होता है जबकि 6% होना चाहिए । हमारे यहाँ लोग सब सहते रहते हैं। इससे ग़रीब और ग़रीब होता जा रहा है और 'कॉरपोरेट्स' का बोलबाला बढ़ा है।

'राही' सहयोगी संस्थान के निदेशक प्रबोध गोविल ने कहा कि आज बीसियों चैनल हैं और हर चैनल पर चुनावी घोषणाओं पर विमर्श होता रहता है। जब तक मतदाता जागरूक नहीं होगा तब तक लोकतन्त्र सार्थक एवं मज़बूत नहीं होगा। आज नेतृत्व में निम्नस्तर के नेताओं का बोलबाला हो गया है। वरिष्ठ पत्रकार गुलाब बत्रा ने कहा कि आज इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रसार तथा सोशल मीडिया के उत्तरोत्तर व्यवहार के कारण झूठ, छल, कपट, मक्कारी का ताण्डव नृत्य हो रहा है। भ्रष्टाचार-भ्रष्टाचार का गान चल रहा है। राजस्थान ब्रजभाषा अकादमी के पूर्व सचिव गोपाललाल गुप्ता ने कहा कि विभिन्न नेताओं द्वारा खुले आम आदर्श आचार संहिता का उल्लंघन किया जाता है, यहाँ तक कि उनके भाषण 'हेट स्पीच' की परिधि में भी आ जाते हैं।

प्रखर चिन्तक सुधांशु मिश्र ने कहा कि हमारा लोकतन्त्र ऐतिहासिक रुग्णता से गुज़र रहा है। चुनावी घोषणाएँ 'हाथी के दाँत खाने के और दिखाने के और' की तरह हैं। उनका व्यावहारिक पक्ष अत्यन्त कलुषित रहा है। लोकतन्त्र में 'कलेक्टिव कॉन्शयसनैस' का महत्त्व होना चाहिए। सात दशकों बाद भी 'हमने' लोकतान्त्रिक मूल्यों को आत्मसात नहीं किया । दलबदल हो रहा है। 'सुकरात' भी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता माँग रहा है।वरिष्ठ पत्रकार अनिल यादव ने कहा कि वस्तुस्थिति तो यह है कि 'लोकतन्त्र' एक छलावा है। जनता को चाहिए कि वह प्रबुद्ध और सजग व्यक्तियों का प्रेशर ग्रुप्स बनाए और जब जहाँ नीतियों के क्रियान्वयन में विचलन आए तो हस्तक्षेप करें।प्रबुद्ध चिन्तक दामोदर चिरानिया ने कहा कि चुनावी घोषणा पत्र जनसाधारण के लिए एक बेंचमार्क के रूप में कार्य करता है। अब चुनावी घोषणाओं पर बहस, विमर्श, चर्चा होने लगी हैं यद्यपि इनकी वैधानिक मान्यता नहीं है पर इनकी राजनीतिक उपयोगिता बढ़ गई है। पूर्व बैंकर प्रबुद्ध विचारक इन्द्र भंसाली ने कहा कुछ दलों ने 'फ्रीबीज़' लक्षित समूहों को रेवड़ियों का वादा करने पर ध्यानाकर्षित किया है। अपने संयोजकीय वक्तव्य में 'शब्द संसार' के अध्यक्ष श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि ताज़ा सर्वेक्षण में काँग्रेस द्वारा बेरोज़गारी, महँगाई तथा ग़ैर बराबरी, भ्रष्टाचार के मुद्दे भी विमर्श में आ गए हैं जिन्हें दस साल में कभी तरजीह न दी गई।संगोष्ठी में साहित्यकार कल्याणसिंह शेखावत, वरिष्ठ जनसम्पर्ककर्मी सुमनेश शर्मा, सुप्रतिष्ठित व्यंग्यकार फ़ारूक़ आफ़रीदी,डॉ. सुषमा शर्मा, प्रबुद्ध चिन्तक प्रो.जी.के. श्रीवास्तव, यशवन्त कोठारी तथा डॉ. सत्यवीर ऋषिराज ने भी विचार व्यक्त किए।

पेशेवर खेल में फिटनेस बनाये रखना सबसे जरुरी : धोनी

रांची। एजेंसी

भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने कहा कि खेल में उम्र को लेकर छूट नहीं मिलती है। इसलिए उनके पास कड़ी मेहनत करने के अलावा कोई अन्य विकल्प नहीं है धोनी को 42 साल की उम्र में भी अपनी अच्छी फिटनेस के लिए जाना जाता है। उन्होंने इस आईपीएल सत्र में भी अच्छी विकेटकीपिंग और बल्लेबाजी की है। धोनी ने आईपीएल लीग चरण के सभी 14 मैच खेले और निचले क्रम पर जमकर चौके और छक्के लगाये। धोनी ने पूरे टूर्नामेंट में 220.55 की शानदार स्ट्राइक रेट से कुल 161 रन बनाए।

ऐसे में प्रशंसकों का मानना है कि वह अगले सत्र में खेलने के लिए भी फिट हैं। वहीं धोनी का मानना है कि बिना कोई मुकाबले खेले सीधे ही लीग में खेलना काफी मुश्किल है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे एक वीडियो में धोनी ने कहा कि मैं पूरे साल क्रिकेट नहीं खेल रहा हूं। इसलिए मुझे फिट रहना होता है। जब यहां पहुंचता हूं तो मुझे उन युवाओं के खिलाफ प्रतिस्पर्धा करनी होती है जो फिट हैं और अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट खेल रहे हैं। साथ ही कहा कि पेशेवर खेल आसान नहीं है, कोई भी आपको उम्र के हिसाब से राहत नहीं देता।

इसलिए अगर आप खेलना चाहते हैं तो आपको भी अन्य लोगों की तरह ही फिट होना होगा। ऐसे में खान-पान की आदतें, थोड़ा प्रशिक्षण पर काफी ध्यान देना होता है। सोशल मीडिया का आप पर काफी असर होता है पर मैं सोशल मीडिया पर नहीं हूं।

बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंची सिंधु

- सिंधु ने प्री-क्वार्टरफाइनल में कोरिया की सिम यूजिन को शिकस्त दी
- विश्व के 15वें नंबर की खिलाड़ी 15 सिंधु ने 59 मिनट तक चले मैच में सिम को 21-13, 12-21, 21-14 से शिकस्त दी

कुआलालम्पुर। एजेंसी

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता पीवी सिंधु गुरुवार को यहां मलेशिया मास्टर्स सुपर 500 बैडमिंटन टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल में पहुंच गईं। सिंधु ने प्री-क्वार्टरफाइनल में कोरिया की सिम यूजिन को शिकस्त दी। विश्व के 15वें नंबर की खिलाड़ी 15 सिंधु ने 59 मिनट तक चले मैच में सिम को 21-13, 12-21, 21-14 से शिकस्त दी। यह सिंधु की कोरियाई खिलाड़ी पर तीसरी जीत थी। हैदराबाद का 28 वर्षीय खिलाड़ी सिंधु पिछले साल अक्टूबर में घुटने की चोट के बाद वापसी करने के बाद संघर्षरत रही हैं। पांचवीं वरीयता प्राप्त सिंधु क्वार्टरफाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त हान यू से भिड़ेंगी। हान यू ने पिछले महीने निंगबो में एशिया बैडमिंटन चैंपियनशिप में सिंधु को हराया था। सिंधु, जिन्होंने आखिरी बार 2022 सिंगापुर ओपन में खिताब जीता था, का हान के

खिलाफ 5-1 का जबरदस्त रिकॉर्ड है, जो अब विश्व रैंकिंग में 6वें स्थान पर हैं। अन्य परिणामों में, बी सुमीथ रेड्डी और एन सिक्की रेड्डी की मिश्रित युगल जोड़ी चेन तांग जी और तोह ई वेई की शीर्ष वरीयता प्राप्त मलेशियाई जोड़ी से 9-21, 15-21 से हार गई, जबकि महिला युगल में सिमरन सिंघी और रितिका ठाकर मलेशियाई पर्ली टैन और थिना मुरलीधरन से 17-21,11-21 से हार गईं।

जर्मनी में प्रशिक्षण लेंगी सिंधु, लक्ष्य सेन जाएंगे फ्रांस

नई दिल्ली। एजेंसी

शीर्ष भारतीय शटलर पीवी सिंधु और लक्ष्य सेन पेरिस 2024 ओलंपिक खेलों की तैयारी के लिए क्रमशः जर्मनी और फ्रांस में प्रशिक्षण लेंगे, खेल मंत्रालय के मिशन ओलंपिक सेल (एमओसी) ने वित्तीय सहायता के लिए उनके संबंधित प्रस्तावों को मंजूरी दे दी है। एमओसी ने सिंधु के हरमन-न्यूबर्गर स्पोर्ट्सचूले में प्रशिक्षण के लिए सारब्रुकन, जर्मनी जाने के प्रस्ताव को मंजूरी दे दी। पेरिस जाने से पहले वह अपने कोच और सहयोगी स्टाफ के साथ एक महीने से अधिक समय तक वहां प्रशिक्षण लेंगी। दूसरी ओर, लक्ष्य, जो पेरिस में पुरुष एकल स्पर्धा में प्रतिस्पर्धा करेंगे, ओलंपिक खेलों से पहले 8 से 21 जुलाई तक अपने कोच और सहयोगी स्टाफ के साथ द हाले डेस स्पोर्ट्स पासेमेंन में प्रशिक्षण लेंगे। मंत्रालय की विज्ञप्ति में कहा गया है, एमओसी ने मंत्रालय की लक्ष्य ओलंपिक पोडियम योजना (टॉप्स) के तहत उनके हवाई किराया, बोर्डिंग/आवास लागत, स्थानीय परिवहन शुल्क, वीजा शुल्क, शटलकॉक खर्चों के वित्तपोषण को मंजूरी दे दी है।

एमओसी ने टेबल टेनिस खिलाड़ी श्रीजा अकुला और तीरंदाज टीशा पुनिया के उपकरण खरीदने के समर्थन के प्रस्तावों और गोल्फर अदिति अशोक और तैराक आर्यन नेहरा के विभिन्न प्रतियोगिताओं में यात्रा के लिए सहायता के प्रस्तावों को भी मंजूरी दे दी।

एक नजर

रोहित के साथ पारी शुरू करें विराट : पोंटिंग

सिडनी। ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान रिकी पोंटिंग ने कहा है कि विराट कोहली एक करिश्माई बल्लेबाज हैं और टी20 विश्व कप के लिये मेरी पहली पसंद हैं। पोंटिंग ने कहा कि वेस्टइंडीज और अमेरिका में होने वाले टी20 विश्व कप में कोहली को कप्तान रोहित शर्मा के साथ पारी की शुरूआत करनी चाहिये क्योंकि मध्यक्रम में सूर्यकुमार यादव समेत अन्य तेजी से रन बना सकते हैं। उन्होंने कहा सलामी जोड़ी को लेकर चयनकताओं को फैसला लेना है क्योंकि यशस्वी जायसवाल भी टीम में है। जायसवाल के बल्लेबाजी क्रम पर फैसला लेना होगा पर मुझे भरोसा है कि पारी की शुरूआत कोहली और रोहित करेंगे। उन्होंने कहा वह शीर्षक्रम में अहम भूमिका बखूबी निभा सकता है। वहीं अन्य बल्लेबाज बाद में तेजी से रन बना सकते हैं। साथ ही कहा कि इसके बाद भी उन्हें कम स्ट्राइक रेट जैसी बातों को लेकर टीम से बाहर करने के बहाने तलाशे जाते हैं जो सबसे अधिक हैरान करनी वाली बात है।

स्कॉटलैंड ने यूरो 2024 के लिए 28 खिलाड़ियों की अस्थायी टीम घोषित की

एडिनबर्ग। स्कॉटलैंड ने बुधवार को जर्मनी में आगामी यूरो 2024 के लिए अपने 28-खिलाड़ियों की अस्थायी टीम की घोषणा की। चोटों के कारण स्कॉटलैंड की तैयारियों में बाधा उत्पन्न होने के कारण, मुख्य कोच स्टीव क्लार्क ने 15 जून से शुरू होने वाले इस प्रतिष्ठित आयोजन के लिए 28 खिलाड़ियों की अस्थायी टीम घोषित की। स्कॉटलैंड को 7 जून को रात 11 बजे तक विस्तारित टीम में 26 खिलाड़ियों की कटौती करनी होगी। यह उसी दिन होगा, जब क्लार्क की टीम अपना अंतिम अभ्यास मैच फिनलैंड के खिलाफ खेलेगी। गोलकीपर क्रेग गॉर्डन को टीम में जगह मिली है, 41 वर्षीय खिलाड़ी ने दिसंबर 2022 में डबल लेग ब्रेक के बाद एक्शन में वापसी की। साथ ही गॉर्डन, जेंडर क्लार्क, एंगस गन और लियाम केली को भी गोलकीपरों की सूची में शामिल किया गया है।

यूरो 2024 के लिए स्कॉटलैंड की टीमः-

गोलकीपर : जेंडर क्लार्क, क्रेग गॉर्डन, एंगस गन, लियाम केली।

डिफेंडर्स : लियाम कूपर, ग्रांट हैनली, जैक हेंड्री, रॉस मैककॉरी, स्कॉट मैककेना, रयान पोर्टियस, एंथोनी राल्स्टन, एंडी रॉबर्टसन, जॉन सॉटर, ग्रेग टेलर, कीरन टियरनी।

मिडफील्डर : स्टुअर्ट आर्मस्ट्रांग, रयान क्रिस्टी, बिली गिल्मर, रयान जैक, केनी मैकलीन, जॉन मैकगिन, कैलम मैकग्रेगर, स्कॉट मैकटोमिने।

फॉरवर्ड : चे एडम्स, बेन डॉक, लिंडन डाइक्स, जेम्स फॉरेस्ट, लॉरेंस शैंकलैंड।

यूरोप दौरे के अपने दूसरे मैच में हारी भारतीय जूनियर महिला और पुरुष हॉकी टीमें

ब्रेडा। एजेंसी

भारतीय जूनियर महिला और पुरुष हॉकी टीमों को यूरोप दौरे पर बुधवार को बेल्जियम की टीमों के खिलाफ अपने-अपने मैचों में हार का सामना करना पड़ा। दोनों टीमें अपने बेल्जियम समकक्षों से 2-3 से हार गईं। जहां बिनीमा धान (49', 58') ने भारतीय जूनियर महिला टीम के लिए दो गोल किए, वहीं कप्तान रोहित (44', 57') ने भारतीय पुरुष टीम के लिए दो गोल किए।

महिला हॉकी टीमः-

भारतीय जूनियर महिला टीम दौरे के अपने दूसरे मैच में बेल्जियम से कड़े मुकाबले में 2-3 से हार गई। पहले क्वार्टर में भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम शुरूआत में ही दो पेनल्टी कॉर्नर जीतकर बढ़त लेने के लिए उत्सुक दिखी। हालाँकि, टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। बेल्जियम ने दूसरे क्वार्टर में जोरदार जवाब दिया और मध्यांतर से पहले 1-0 की बढ़त ले ली। बेल्जियम ने तीसरे और चौथे क्वार्टर में गोल कर अपनी बढ़त 3-0 कर ली। हालांकि, भारतीय जूनियर महिला हॉकी टीम के लिए बिनीमा धान (49', 58') ने अंतिम क्वार्टर में दो गोल करके स्कोर 3-2 कर दिया और यही स्कोर निर्णायक साबित हुआ। भारतीय जूनियर महिला टीम अपना अगला मैच 24 मई को एंटवर्प में बेल्जियम के खिलाफ खेलेगी।

भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम रोमांचक मुकाबले में बेल्जियम से हारी :

भारतीय जूनियर पुरुष टीम यूरोप दौरे के अपने दूसरे मैच के दौरान रोमांचक मुकाबले में बेल्जियम से 2-3 से हार गई। बेल्जियम ने पहले क्वार्टर में ही गोल कर बढ़त बना ली। भारतीय कोल्ट्स ने दूसरे क्वार्टर में बराबरी करने की भरपूर कोशिश की लेकिन बेल्जियम ने एक और गोल कर अपनी बढ़त दोगुनी कर दी। पहला हाफ समाप्त होने पर भारतीय टीम 0-2 से पीछे थी। भारतीय जूनियर पुरुष हॉकी टीम के लिए कप्तान रोहित ने 44वें मिनट में गोल कर स्कोर 2-1 कर दिया।

हालांकि, बेल्जियम ने पेनल्टी कॉर्नर पर तीसरा गोल करके अपनी दो गोल की बढ़त फिर से हासिल कर ली। भारतीय कप्तान रोहित ने 57वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर को गोल में बदलकर अपनी टीम को मुकाबले में बनाए रखा, लेकिन बेल्जियम ने अपनी बढ़त बरकरार रखी और भारतीय जूनियर पुरुष टीम 2-3 से मैच हार गई। भारतीय जूनियर पुरुष टीम अपना अगला मैच 23 मई को नीदरलैंड के ब्रेडा में ब्रेडेज हॉकी वेरेनिगिंग पुश के खिलाफ खेलेगी।

मकाबी तेल अवीव ने इजरायली बास्केटबॉल नियमित सीजन में पहला स्थान हासिल किया

जेरूसलम। एजेंसी

इजरायली चैंपियन मकाबी तेल अवीव ने बुधवार रात इजरायली प्रीमियर लीग में हापोएल तेल अवीव पर 88-82 से घरेलू जीत हासिल की। इसके साथ ही मकाबी ने लीग में 27 मैचों में अपनी 23वीं जीत दर्ज की, जिससे वह 8 टीमों की अंकतालिका में शीर्ष पर पहुंच गया। वहीं, हापोएल, अब 21-7 जीत-हार की रिकॉर्ड के साथ, दूसरे स्थान से प्लेऑफ में प्रवेश करेगा। दक्षिणी तेल अवीव में मेनोराह मिवतचिम एरिना में 10,000 प्रशंसकों के सामने, हापोएल ने ब्रायन अंगोला के बेहतरीन खेल की बदौलत पहले क्वार्टर के अंत में 20-16 की बढ़त ले ली।

- टायलर एनिस के रिबाउंड और पॉइंट्स की बदौलत हापोएल ने हाफटाइम तक 40-31 की बढ़त ले ली

इसके बाद टायलर एनिस के रिबाउंड और पॉइंट्स की बदौलत हापोएल ने हाफटाइम तक 40-31 की बढ़त ले ली। हालांकि इसके बाद तीसरे क्वार्टर में रोमन सॉर्किन और लोरेंजो ब्राउन ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन करते हुए मैकाबी को वापसी दिलाई और 58-54 की बढ़त हासिल कर ली। अंत में सॉर्किन और तामीर ब्लाट के अंकों की बदौलत मैकाबी ने 88-82 से जीत हासिल कर ली। सॉर्किन 19 अंकों के साथ मैकाबी के शीर्ष स्कोरर रहे, जबकि ब्राउन ने 18 अंक जोड़े। हापोएल के लिए जेलेन होर्ड ने सर्वाधिक 22 अंक बनाए।

इंग्लैंड-पाकिस्तान के बीच पहला टी20 मैच चढ़ा बारिश की भेंट

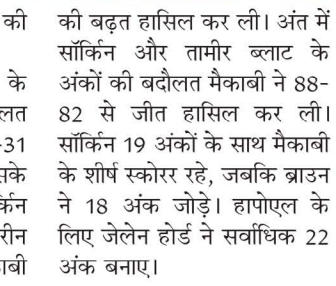

नई दिल्ली। लगातार बारिश के कारण बुधवार को हेडिंग्ले में इंग्लैंड और पाकिस्तान के बीच पहला टी-20 अंतरराष्ट्रीय मैच एक भी गेंद फेंके बिना रद्द कर दिया गया। लीड्स में भारी और लंबी बारिश के कारण अंपायरों को मैच भारतीय समयानुसार निर्धारित रात 11 बजे शुरू होने से लगभग एक घंटे पहले खेल रद्द करना पड़ा। पाकिस्तान के खिलाफ चार मैचों की श्रृंखला के बाकी मैच 25 मई, 28 मई और 30 मई को क्रमशः एजबेस्टन, कार्डिफ और ओवल में खेले जाएंगे। पाकिस्तान टी20 सीरीज से इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर की अंतरराष्ट्रीय टीम में वापसी हो सकती है। चोटों ने इस तेज गेंदबाज के करियर को खराब कर दिया है, कोहनी और पीठ की समस्याओं के कारण यह 29 वर्षीय खिलाड़ी 14 महीने से शीर्ष स्तर के क्रिकेट से दूर रहा है।

तेजस शिरसे ने 110 मीटर बाधा दौड़ में राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ा

- पुरुषों की 110 मीटर बाधा दौड़ में राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया
- ओलंपिक खेलों के लिए स्वचालित योग्यता से एक सेकंड के सौवें हिस्से से चूक गईं

नई दिल्ली। एजेंसी

तेजस शिरसे ने बुधवार को फिनलैंड के ज्यवास्किला में विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर (चैलेंजर स्तर) मीटिंग के दौरान पुरुषों की 110 मीटर बाधा दौड़ में एक नया राष्ट्रीय रिकॉर्ड बनाया। 21 वर्षीय शिरसे ने फाइनल में 13.41 सेकेंड का समय लिया और 2017 में सिद्धांत थिंगालय द्वारा बनाए गए 13.48 सेकेंड के पिछले राष्ट्रीय रिकॉर्ड को तोड़ दिया। शिरसे का रिकॉर्ड सामान्य अनुसमर्थन प्रक्रिया के अधीन है। हालाँकि, पेरिस ओलंपिक के लिए पुरुषों की 110 मीटर बाधा दौड़ में प्रवेश मानक 13.27 सेकेंड है। महिलाओं की 100 मीटर बाधा दौड़ में, ज्योति याराजी ने 12.78 सेकेंड के अपने राष्ट्रीय रिकॉर्ड अंक की बराबरी की और पहले स्थान पर रहीं, वह ओलंपिक खेलों के लिए स्वचालित योग्यता से एक सेकंड के सौवें हिस्से से चूक गईं।

अनिमेष कुजूर ने 100 मीटर में नया व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 10.39 सेकेंड के साथ दूसरा स्थान हासिल किया। अमलान बोरगोहेन अपने सीजन की सर्वश्रेष्ठ 10.54 सेकेंड की टाइमिंग के साथ चौथे स्थान पर रहे। पुरुषों की 100 मीटर दौड़ के लिए पेरिस ओलंपिक में प्रवेश मानक 10 सेकेंड है। मोहम्मद अफसल ने पुरुषों की 800 मीटर स्पर्धा 1:48.91 सेकेंड में जीती, जो उनके व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ 1:46.17 सेकेंड से काफी कम है। 18 वर्षीय लंबी जम्पर पावना नागराज 6.06 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ पांचवें स्थान पर रहीं। बर्गेन, नॉर्वे में विश्व एथलेटिक्स कॉन्टिनेंटल टूर (रजत स्तर) इवेंट ट्रोंड मोहन गेम्स में, लंबी कूद खिलाड़ी शैली सिंह 6.12 मीटर के सर्वश्रेष्ठ प्रयास के साथ सात एथलीटों के बीच दूसरे स्थान पर रहीं।

तुष्टिकरण की राजनीति से कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने लोकतंत्र को छिन्न भिन्न करने का कुत्सित प्रयास किया: प्रभुलाल सैनी

तुष्टिकरण के नाम पर किसी भी हद तक गिर सकते हैं कांग्रेस और उसके सहयोगी दल, ममता सरकार में हिंदुओं पर बढ़े अत्याचार: जितेंद्र गोठवाल

चमकता राजस्थान

जयपुर। भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री प्रभुलाल सैनी और प्रदेश महामंत्री एवं विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने गुरूवार को भाजपा प्रदेश मुख्यालय पर प्रेसवार्ता को संबोधित करते हुए इंडी गठबंधन और पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी पर तुष्टिकरण की राजनीती करने और मुस्लिम आरक्षण को लेकर कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना करने पर कड़े शब्दों में निंदा की है। प्रभुलाल सैनी ने कहा कि कांग्रेस और उसके सहयोगी दलों ने देश में तुष्टिकरण की राजनीती के बल पर फूट डालने और लोकतंत्र को छिन्न भिन्न करने का कुत्सित प्रयास किया है। लोकतंत्र में संवैधानिक प्रक्रिया के खिलाफ किसी भी जनप्रतिनिधि की ऐसी भाषा और आचरण माफी योग्य नहीं है। बाबा साहब भीमराव अंबेडकर द्वारा रचित संविधान में धर्म के आधार पर आरक्षण का कोई प्रावधान नहीं है, लेकिन विगत विधानसभा चुनावों में ममता बनर्जी ने अल्पसंख्यक समुदाय को 10 प्रतिशत आरक्षण देने का वादा किया था। ममता बनर्जी अपनी हठधर्मिता के चलते न्यायालय के आदेशों की खुलेआम अवमानना कर रही हैं।

भाजपा प्रदेश उपाध्यक्ष एवं पूर्व मंत्री प्रभुलाल सैनी ने कहा कि कांग्रेस ने तुष्टिकरण की राजनीति के तहत 2004 में रंगनाथ मिश्रा कमेटी बनाई, 2005 में सच्चर कमेटी बनाई और उसके बाद 2008 में अल्पसंख्यक

आयोग का गठन किया। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने भी देश के संसाधनों पर अल्पसंख्यक समुदाय का पहला अधिकार बताकर तुष्टिकरण की राजनीति को बल दिया था। कलकत्ता उच्च न्यायालय ने बुधवार को आदेश देते हुए 2010 से 2012 तक धर्म के आधार पर मुस्लिम समुदाय को दिये गये ओबीसी आरक्षण के सभी सरकारी आदेशों को असंवैधानिक करार दिया है। न्यायालय ने इस दौरान पश्चिम बंगाल में जारी किये गये करीब पांच लाख ओबीसी प्रमाण पत्रों को रद्द करने के आदेश दिये हैं। वहीं न्यायालय ने कठोर टिप्पणी करते हुए कहा कि ममता बनर्जी सरकार ने समुदाय विशेष के वोटबैंक की खातिर बिना ओबीसी आयोग की संवैधानिक राय लिए धर्म के आधार पर आरक्षण लागू किया है। ओबीसी आयोग ने सर्वे के बाद जिन 42 वर्गों को ओबीसी आरक्षण का हकदार माना था उसमें से 41 वर्ग मुस्लिम समुदाय से आते हैं इससे स्पष्ट है कि यह आरक्षण राजनैतिक षड़यंत्र के आधार पर दिया गया है।

भाजपा प्रदेश महामंत्री एवं विधायक जितेन्द्र गोठवाल ने कांग्रेस और टीएमसी पर न्यायालय की गरिमा और आस्था पर प्रहार करने का आरोप लगाते हुए कहा कि तुष्टिकरण के नाम पर ये लोग किसी भी हद तक गिर सकते हैं। खुदकी सरकार को पारदर्शी सरकार बताकर दंभ भरने वाली ममता बनर्जी ने बंगाल में आज हिंदुओं को विस्थापित होने को मजबूर कर दिया है। आज बंगाल में समुदाय विशेष के लोगों को विशेष तवज्जो दी जाती है, वहीं हिंदुओ की उपेक्षा कर उनके खिलाफ निरंतर अत्याचार बढ़ रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी कई अवसरों पर कांग्रेस की तुष्टिकरण की नीति और हिंदु विरोधी मानसिकता पर प्रहार किया है। पीएम मोदी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ओबीसी वर्ग के आरक्षण को लेकर गंभीर है इसलिए 2017 में न्यायाधीश रोहिणी के नेतृत्व में कमीशन बनाकर ओबीसी आरक्षण की समीक्षा करने का काम शुरू किया। देश की 51 फीसदी ओबीसी आबादी के हितों पर कोई कुठाराघात ना हो इसके लिए पीएम मोदी निरंतर प्रयासरत हैं। वहीं दूसरी ओर इंडी गठबंधन तुष्टिकरण के आधार पर देश को बांटने का काम कर रहा है।

संक्षिप्त समाचार

सरमथुरा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने पक्षियों की सेवार्थ लगायें परिंडे

चमकता राजस्थान/धौलपुर(रामदास तरुण)। सरमथुरा ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जितेंद्र जादौन ने सीबीइओ परिसर में पक्षियों के लिए परिंडे लगाये गये, ब्लॉक शिक्षा अधिकारी जितेंद्र जादौन ने कहा कि भीषण गर्मी में पक्षियों के लिए भी पानी की परेशानी होती है। ऐसे में पक्षियों का जीवन बचाने के लिये परिंडे लगाना जरूरी है। कई बेजुबान पक्षी इस भीषण गर्मी में प्यास से व्याकुल होते हैं। इसके लिए उन पक्षियों के लिए पानी उपलब्ध कराया जाना आवशयक है। अतिरिक्त ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामगोपाल मीणा ने ऐसा कर आम लोगों को भी पक्षियों के प्रति दयाभाव रख दाना-पानी का प्रबंध करने का संदेश दिया। उन्होंने कहा यदि हम इस पुण्य काम को करने में अपनी सहभागिता निभाएंगे तो यकीनन, हजारों प्यासे पक्षियों की जान बचा पाएंगे। इस अवसर पर आरपी प्रीतम सिंह मीणा एवं परिषद के अधिकारी और कर्मचारीगण ने परिंडे बाँध कर पक्षियों के प्रति दया भाव रखने का संदेश दिया।

उदयपुर जिले में थाना सवीना पुलिस ने किया अंतरराज्यीय चौपहिया वाहन चोर गिरोह का खुलासा

- चोरी की स्कॉर्पियो व स्विफ्ट डिजायर कार बरामद, एक अभियुक्त गिरफ्तार

चमकता राजस्थान। जयपुर/उदयपुर (खलील कुरैशी) 23 मई। उदयपुर जिले की सवीना थाना पुलिस ने अंतरराज्यीय चौपहिया वाहन चोर गिरोह का खुलासा करते हुए चोरी की स्कॉर्पियो व स्विफ्ट डिजायर कार बरामद कर एक अभियुक्त विकास उर्फ कालू कुमावत पुत्र छिगनलाल (26) निवासी थाना रानोली जिला सीकर को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है।एसपी योगेश गोयल ने बताया कि 6 अप्रैल की रात सैक्टर-14 निवासी प्यार चंद जाट की स्कॉर्पियो घर की पार्किंग से चोरी हो गई। रिपोर्ट पर मुकदमा दर्ज कर वाहन चोरी की घटनाओं की रोकथाम के लिए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा व सीओ छगन पुरोहित के सुपरविजन एवं एसएचओ सवीना फूलचंद टेलर के नेतृत्व में विशेष टीम गठित की गई।विशेष टीम के एएसआई नरेश कुमार, कांस्टेबल भगवती लाल व मांगीलाल की टीम द्वारा मुखबिर तंत्र, तकनीकी संसाधनों व सीसीटीवी फुटेज के आधार पर जानकारी जुटाई तो चोरी की गाड़ी सीकर की ओर जाने की सूचना मिली। इस पर टीम तुरंत सीकर पहुंची। जहां उन्हें एक गैराज में काफी सन्दिग्ध वाहनों के खड़े होने की जानकारी मिली। इस पर स्थानीय पुलिस को सूचना देकर उनके सहयोग से दबिश दी गई।गैराज में खड़ी गाड़ियों में सवीना थाना क्षेत्र से चुराई स्कॉर्पियो भी थी। जिसे टीम ने जब्त कर लिया। बाकी गाड़ियां सीकर पुलिस द्वारा जब्त की गई। मौके से सवीना पुलिस ने विकास उर्फ कालू कुमावत को गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को कोर्ट में पेश कर पुलिस रिमांड पर लिया गया है। जिससे अन्य वाहन चोरियों के बारे में पूछताछ की जा रही है।

एसपी गोयल ने बताया कि इसी दौरान टीम को सूचना मिली कि थाना सवीना इलाके से 7 अप्रैल की रात चुराई एक अन्य स्विफ्ट डिजायर कार टोडाभीम इलाके में देखी गई है। इस पर पुलिस की टीम तुरंत टोडाभीम के पाली गांव पहुंची, जहां राकेश नाम के व्यक्ति घर से कार जब्त की गई।आरोपी राज्य के विभिन्न शहरों से चौपहिया वाहनों की चोरी कर गाड़ी के नंबर के साथ इंजन व चेचिस नंबर बदल कर औने-पौने दामों में तथा पुरानी गाड़ियों को कटवा कर कबाड़ी को पार्ट्स बेच देते है।

जयपुर जोन के मुख्य अभियन्ता ने फील्ड में जाकर लिया उपभोक्ताओं से विद्युत आपूर्ति का फीडबैक

चमकता राजस्थान

जयपुर। वर्तमान में चल रहे हीटवेव के चलते गुरुवार 23 मई को जयपुर डिस्कॉम के जयपुर जोन के मुख्य अभियन्ता आर. के. जीनवाल ने मय टीम के जयपुर शहर की आधा दर्जन से अधिक कॉलोनियों में जाकर विद्युत तंत्र का निरीक्षण किया एवं उपभोक्ताओं से विद्युत आपूर्ति संबंधित जानकारी ली।

मुख्य अभियन्ता द्वारा अपनी टीम के साथ मुरलीपुरा क्षेत्र में विकास नगर, आर्य नगर, झोटवाड़ा क्षेत्र में चूड़ी मार्केट, मानसरोवर कॉलोनी, कालवाड़ रोड़, रेल्वे ऑफिसर्स कॉलोनी, गुर्जर कॉलोनी, बृजमण्डल कॉलोनी क्षेत्र में स्थापित विद्युत तंत्र का निरीक्षण किया एवं स्थानीय निवासियों एवं उपभोक्ताओं से विद्युत आपूर्ति के संबंध में जानकारी ली। सभी स्थानों के लोगों द्वारा शहर में की जा रही विद्युत आपूर्ति के बारे में अपनी पूर्ण संतुष्टि जताई गई।

फील्ड में निरीक्षण के दौरान बृजमण्डल कॉलोनी के उपभोक्ता द्वारा अवगत कराया गया कि ट्रांसफार्मर के ओवरलोड की समस्या आ रही है, जिस पर मुख्य अभियन्ता द्वारा मौके पर ही फील्ड अधिकारियों को उच्च क्षमता का ट्रांसफार्मर लगाकर उपभोक्ताओं की समस्या का निवारण करने के निर्देश दिये।

विद्युत तंत्र के निरीक्षण के दौरान जहां-जहां तंत्र में आवशयक सुधार की आवष्यकता है, वहां मौके पर ही मौजूद फील्ड अधिकारियों को अविलम्ब निस्तारण हेतु उचित दिषा-निर्देश प्रदान किये गये।

कांग्रेस, टीएमसी, सपा और अन्य विपक्षी दल अतीत में हुए धर्म आधारित भारत विभाजन की मानसिकता पर आगे बढ़ रहे हैं: डॉ. अल्का सिंह गुर्जर

चमकता राजस्थान

जयपुर। भाजपा की राष्ट्रीय सचिव डॉ. अल्का सिंह गुर्जर ने पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा मुस्लिम आरक्षण पर कलकत्ता उच्च न्यायालय के आदेश की अवमानना करने पर इसे संवैधानिक हमला करार दिया है। डॉ. अल्का सिंह गुर्जर ने कहा कि ममता बनर्जी द्वारा जिस प्रकार राजनीतिक तुष्टिकरण के आधार पर 5 लाख से अधिक एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग का आरक्षण काटकर मुस्लिम वर्ग को दिया गया था, उसे माननीय हाईकोर्ट द्वारा वापस लेने एवं एससी, एसटी और ओबीसी वर्ग को लौटाने का आदेश दिया गया है। ममता सरकार के ओबीसी आरक्षण देने के फैसले के खिलाफ 2011 में जनहित याचिका दाखिल

की गई थी। इसमें दावा किया गया कि 2010 के बाद दिए गए सभी ओबीसी सर्टिफिकेट 1993 के पश्चिम बंगाल पिछड़ा वर्ग आयोग अधिनियम को दरकिनार कर दिए गए।

भाजपा की राष्ट्रीय सचिव डॉ. अल्का सिंह गुर्जर ने कहा कि राजनीतिक तुष्टिकरण और स्वार्थ के चलते कांग्रेस, टीएमसी, सपा और बाकी विपक्षी दल अतीत में हुए धर्म आधारित भारत विभाजन की मानसिकता पर आगे बढ़ रहे हैं। कोर्ट के निर्णय के बाद इन्हें जनता से माफी मांगनी चाहिए और इस पर अपनी स्थिति स्पष्ट करनी चाहिए। माननीय न्यायालय ने टीएमसी सरकार द्वारा एक धर्म विशेष को दिये गये आरक्षण पर टिप्पणी करते हुए कहा कि ममता बनर्जी सरकार ने अपने वोटबैंक की खातिर संवैधानिक राय लिए बिना राजनैतिक षड़यंत्र रचा था। ओबीसी आयोग द्वारा कराए गए सर्वे के आधार पर आरक्षण ना देकर समुदाय विशेष को आरक्षण देना पूरी तरह असंवैधानिक है।

26 मई को थैलीसीमिया पीड़ितों के लिए रक्तदान शिविर

चमकता राजस्थान/जयपुर। 26 मई को जयपुर की 30 साल से समाज सेवा में कार्यरत सामाजिक संस्था श्री श्याम महोत्सव सेवा समिति द्वारा थैलीसीमिया से पीड़ितों के लिए रक्तदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है। 8 मई को विश्व थैलीसीमिया दिवस का आयोजन पूरे विश्व स्तर पर किया जाता है उसी कड़ी में हर महीने के चौथे रविवार को श्री श्याम महोत्सव समिति के द्वारा रक्तदान शिविर आयोजित किया जाता है।श्री श्याम महोत्सव सेवा समिति के संरक्षक ओमप्रकाश मोदी ने बताया कि समिति पिछले 30 सालो से लगातार निशुल्क स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन कर रही है एवम जरूरतमंद लोगों को राजस्थान के ब्लड बैंको से रक्त उपलब्ध करवाया जाता है। शिविर में सहायक हैप्पी प्वाइंट ग्रुप ऑफ स्कूल्स एवम श्री अग्रवाल सेवा समिति विद्याधर नगर है। ओमप्रकाश मोदी ने सभी जयपुर वासियों से निवेदन किया है की रक्तदान महादान होता है। स्वयं रक्तदान करे एवम अपने परिवार और मित्रो को इसके लिए प्रेरित करे। शिविर धनश्री प्लस बी 2 बेसमेंट विद्याधर नगर जयपुर में सुबह 9 बजे से दोहपर 12 बजे तक आयोजित किया जा रहा है। शिविर की जानकारी के लिए इस 9829052595 दूरभाष पर संपर्क किया जा सकता है।

आर्य समाज राजापार्क में पर्यावरण संरक्षण पर संगोष्ठी का आयोजन, गौकाष्ठ से किया सामूहिक हवन

भावी पीढ़ी के सुरक्षित भविष्य के लिए पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों को निभाने का संकल्प लें: रवि नैय्यर

चमकता राजस्थान

जयपुर। प्रमुख समाज सेवी एवं भाजपा नेता रवि नैय्यर के नेतृत्व में आज आर्य समाज, राजापार्क में ₹पर्यावरण संरक्षण₹ विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी गणमान्यों ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाने एवं दायित्वों को निभाने का संकल्प लेते हुए गौकाष्ठ से सामुहिक हवन किया।

मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के प्रचारक अशोक कुमार ने विचार व्यक्त करते हुए ने कहा कि वर्तमान परिवेश में पर्यावरण प्रदूषण पूरी दुनिया के लिए एक गंभीर चुनौती बन चुका है।

प्रकृति ने पृथ्वी पर पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन उपलब्ध करवाए हैं, परन्तु मानव जाति द्वारा प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन करने के कारण पृथ्वी के पर्यावरण चक्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है, जिसके दुष्प्रभाव हमें देखने को मिल रहें हैं। वैश्विक तापमान में वृद्धि, अतिवृष्टि, भीषण गर्मी, पिघलते ग्लेशियर, भूकंप, फटते ज्वालामुखी, इत्यादि घटनाएं लगातार प्रदूषित होते पर्यावरण के कारण ही है। जंगलों व पहाड़ों में लगातार बढ़ती आग लगने की घटनाएं भी पर्यावरण में हो रहे बदलाव के कारण ही है। जंगलों में लगातार बढ़ती आग लगने की घटनाओं से वन्य जीवों और पेड़ों के नुकसान के साथ प्राकृतिक जलस्त्रोतों पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हमें समझना होगा कि बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण मानव जाति के साथ साथ वन्य जीव जंतुओं एवं प्राकृतिक संपदाओं के अस्तित्व पर खतरा बढ़ता जा रहा है। इसलिए समय रहते हमें सामूहिक रूप से इस दिशा में आवशयक व प्रभावी प्रयास करने की अवशयकता है।

भाजपा नेता रवि नैय्यर ने बताया कि आर्य समाज राजापार्क में प्रतिदिन प्रातः काल एवं सांयकाल गौकाष्ठ से हवन किया जाता है। धार्मिक व सामाजिक अनुष्ठानों में गौकाष्ठ का अधिक से अधिक उपयोग करने का आव्हान करते हुए नैय्यर कहा कि गौकाष्ठ के उपयोग से प्रतिवर्ष लाखों पेड़ों को कटने से बचाया जा सकता है। अपनी भावी पीढ़ी के सुरक्षित भविष्य के लिए हमें पर्यावरण संरक्षण के प्रति अपने दायित्वों को निभाने का संकल्प लेना होगा।

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अभय सिंह चौहान के लिए एम बी प्रिंटर्स, सी 74 सुदर्शन पूरा, जयपुर से मुद्रित एवं 1ए देवी नगर विस्तार, देवी नगर गली नं. 6 जयपुर 302019 से प्रकाशित। सम्पादक : अभय सिंह चौहान,
मोबाइल : 9314505000 (पीआरबी एक्ट के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार) संपादक : खलील कुरैशी, मोबाइल : 7891542929